ऋग्वेद-सारः

6.4

विनोबा

परंधाम प्रकाशन, पवनार

ऋग्वेद-सारः

★

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति

★

विनोबा

१९८९

परंधाम प्रकाशन, पवनार

प्रकाशक :
रणजित् देसाई,
परंधाम प्रकाशन; ग्राम-सेवा मंडळ;
पवनार, वर्धा (महाराष्ट्र)

तृतीयावृत्ति : जून १९८९
मूल्य : दहा रुपये

मुद्रक :
रणजित् देसाई,
परंधाम मुद्रणालय,
पो. पवनार (वर्धा)

प्रकाशकीय

त्रेसठ साल पहले मां की मृत्यु हुई, उसी दिन वेद-माता की गोद का आश्रय लिया – ऐसा विनोबाजी कहते हैं। इतने वर्षों के उनके दीर्घ अध्ययन-मनन के बाद उनका किया हुआ ऋग्वेद का यह चुनाव प्रकाशित हो रहा है।

ऋग्वेद के १० मंडलों में कुल मिला कर १०२८ सूक्त हैं। उनमें के ६७६ सूक्तों में से चुनाव किया है। ३५२ सूक्तों से कुछ भी नहीं लिया है। संपूर्ण सूक्त २३ लिये हैं। उनकी मंत्र-संख्या १७१ होती है। ५२ सूक्त ऐसे हैं, जिनमें से आधे से ज्यादा, या ४ मंत्रों से अधिक मंत्र लिये हैं। इन ५२ सूक्तों की मंत्र-संख्या २९७ है। ५० सूक्तों में से ३ मंत्र, १५३ सूक्तों में से २ मंत्र और ३९५ सूक्तों में से केवल एक ही मंत्र लिया है। १०,५५२ मंत्रों में से १३१९ मंत्र लिये हैं। यानी आठवां हिस्सा चुना हैं।

जो मंत्र लिये हैं वे अधिकतर पूरे ही लिये हैं। लेकिन कई मंत्रों का अर्ध, तो किसी का एक चरण भी लिया है। इस तरह संक्षेप किये हुए मंत्रों की संख्या ३५५ है। ९६४ मंत्र पूर्ण लिये हैं। गृत्समद ऋषि के दूसरे मंडल में संक्षेप कम से कम है। कुल जो १०८ मंत्र लिये हैं उनमें केवल ५ का ही संक्षेप है। उसी तरह और मंडलों की तुलना में द्वितीय मंडल से मंत्र भी अधिक लिये हैं – चौथा हिस्सा मंत्र लिये हैं। यानी पूर्ण चुनाव के प्रमाण में दुगुने। लगता है कि पू. विनोबाजी का गृत्समद ऋषि के प्रति कुछ पक्षपात है। गृत्समद पर विनोबाजी का एक लेख भी जीवन-दृष्टि नामक पुस्तक में छपा है। सबसे अधिक संक्षेप दशम मंडल में १०० मंत्रों का किया है। सबसे ज्यादा मंत्र-संख्या प्रथम और दशम मंडल की – दोनों की २८३ है। विभाग भी दोनों के २४ ही हैं। हरएक मंडल के विभाग किये हैं। दस मंडल के कुल १०८ विभाग किये हैं।

पू. विनोबाजी जो सार-ग्रंथ तैयार करते हैं उनमें सामान्यतया पुनर्वर्गीकरण, विषयानुरूप क्रम और पुनर्विभाजन भी करते हैं और विभागों का विषय-निर्देशक सूत्रमय नामकरण भी करते हैं। एक तरह से वह उनका सूत्रमय भाष्य ही होता

है। लेकिन इस चुनाव में मंत्रक्रम मूल के अनुसार ही रखा है। विभाग किये हैं लेकिन उनका नामकरण नहीं किया है।

इस चुनाव में कुल २५० ऋषियों के मंत्र लिये हैं। उनकी मंत्रसंख्या इस प्रकार है –

१	वसिष्ठ	१०५	१२	अत्रि	२३
२	गृत्समद	१०३	१३	प्रस्कण्व	२१
३	वामदेव	७१	१४	अगस्त्य	१६
४	भरद्वाज	६४	१५	श्यावाश्व	१६
५	विश्वामित्र	५२	१६	मनु	१६
६	दीर्घतमा	४५	१७	कश्यप	१४
७	शुनःशेप	४०	१८	हिरण्यस्तूप	१२
८	कुत्स	३५	१९	शंयु	११
९	मेधातिथि	२७	२०	कण्व	१०
१०	गोतम	२७	२१	सोभरि	१०
११	मधुच्छंदा	२६	२२	नारायण	१०

इस तरह दश-दशोत्तर मंत्रवाले २२ ऋषियों के मंत्रों की संख्या ७५४ है। जिनके ९ मंत्र लिये हैं ऐसे ६ ऋषि हैं; ८ मंत्रवाले ४; ७ मंत्रवाले १०; ६ मंत्रवाले ४; ५ मंत्रवाले ११; ४ मंत्रवाले १४; ३ मंत्रवाले २१; २ मंत्रवाले ५३; और १ मंत्रवाले १०५ ऋषि हैं। इस तरह १ से ९ मंत्रवाले कुल २२८ ऋषियों के ५६५ मंत्र हैं।

इन २५० ऋषियों में १९ ऋषिकाएं (स्त्रियां) हैं –

१ अदिति	२ अपाला	३ इंद्राणी	४ उर्वशी	५ गोधा
६ घोषा	७ ज़ाया	८ दक्षिणा	९ नद्यः	१० यमी
११ रात्रि	१२ रोमशा	१३ वाक्	१४ विश्ववारा	१५ शची
१६ श्रद्धा	१७ सरमा	१८ सार्पराज्ञी	१९ सूर्या	

कुछ ऋषिनाम या देवतानाम आज की छपी किताबों के नामों से ठीक मिलते-जुलते नहीं हैं। कहीं दो-तीन नाम होते हैं तो उनमें से कौनसा लेना इसका चुनाव विनोबाजी ने किया है। उसी तरह कहीं संक्षेप या कहीं सर्वथा भिन्न नाम पायेंगे। जैसे 'प्रातःस्मरणम्' (७.४.५) – मूल में 'अग्नीन्द्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मण-स्पतिसोमरुद्राः' है (ऋग्वेद ७.४१.१)।

कोष्ठक में जो बडे आंकडे दिये हैं, वे उस-उस मंडल के विभाग के हैं। उसके बाद नीचे की पंक्ति में पहले ऋषिनाम दिये हैं। वे बारीक अक्षरों में हैं। फिर विरामचिह्न दे कर मोटे अक्षरों में देवतानाम दिये हैं। नाम के आगे जो संख्या दी है, वह उस विभाग के मंत्रक्रम का निर्देश है। जैसे प्रथम पृष्ठ – ऊपर का (१) का आंकडा विभाग-द्योतक है। बारीक अक्षरों का 'मधुच्छंदाः' ऋषिनाम है। '१–१५' से सूचित होता है कि १ से १५ तक के मंत्र मधुच्छंदा ऋषि के हैं। फिर मोटे अक्षरों में 'अग्निः' आदि हैं, वे देवतानाम हैं। और उनके आगे के अंक उस-उस देवता के कौनसे मंत्र हैं, यह बताते हैं। छंद-निर्देश नहीं किया है, क्योंकि कई मंत्र संक्षिप्त हैं। १ से ९ मंत्रों के बीच समान अंतर है। ९ और १० के बीच ज्यादा अंतर है। वहां से नया सूक्त आरंभ हुआ है। उसी तरह १२ और १३ वे मंत्र के बीच भी ज्यादा अंतर है। उससे ध्यान में आयेगा कि १३ वें मंत्र से नया सूक्त शुरू हो रहा है।

इसके अलावा इस पुस्तक में हरएक चरण अलग दिखाया है। जैसे 'ऋषिभिरीडयो' (१.१.२) का पदच्छेद कर के 'ऋषिभिः ईडयो' ऐसा छापा है और दोनों पदों के बीच में अंतर भी अधिक रखा है, जिससे कि चरण स्पष्टरूप से अलग दीखे। चरण-निर्णय के लिए स्व. सातवलेकरजी की आवृत्ति को प्रमाण माना है। कुछ स्थानों पर विनोबाजी के सुझाव के अनुसार फर्क किया है। जैसे १.२३.८ के उत्तरार्ध में 'स्वादु' के बदले 'अत्ति' के बाद चरणसमाप्ति की है। और १०.११.२ में 'आरंभणं' के बदले 'अधिष्ठानं' पद के बाद चरण-समाप्ति

की है। चरणांत-पद के रूप के लिए वैदिक संशोधन मंडल (तिलक-विद्यापीठ – पूना) की सायणभाष्यसहित आवृत्ति को अधिकृत माना है। पाठ की दृष्टि से भी उसी को अधिकृत माना है। उपरोक्त दोनों के प्रति हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

वेदार्थ के बारे में सैकडों वर्षों से अनेक प्रयत्न होते आये हैं। लेकिन अब तक कोई समाधानकारक अनुवाद-भाष्य उपलब्ध नहीं है। यह स्वाभाविक भी है। एक तो अत्यंत प्राचीन भाषा और दूसरी बात समाधि की अवस्था में स्फुरित उच्चतम और गूढतम प्रतिभा का यह आविष्कार है। श्री अरविंद कहते हैं कि वेद का सही आशय सीधे ध्यान और तप से मिल सकता है। मंत्रपूत होने से शब्द में ही सामर्थ्य भरी है। इसका अनुभव बहुतों को आया है।

विनोबाजी कहते हैं – "शब्द प्रमाण है, अर्थ तो अनंत हो सकते हैं। इसलिए अर्थ देने का सूझ नहीं रहा। ... ऋषियों का मुख्य उपकार उन्होंने हमें शब्द दिये। ऋणमुक्ति के लिए यह शब्दराशि (यह चुनाव) छप जायेगी।"

ब्रह्मविद्या-मंदिर
७ जून १९८१

– गौतम

* * *

तृतीयावृत्ति

प्रथम आवृत्ति से इस आवृत्ति में केवल एक ही बदल किया गया है। मंडल १० के विभाग २४ में क्र. २ का मंत्र निकाल कर उसके बदले क्रमांक १० का मंत्र नया लिया है।

– गौतम

* * *

वेदों में विविध देवता हों तो भी वे सब एक ही परमात्मा की अंगभूत अथवा विभूतिरूप 'गौण' मानी गयी हैं। गौण यानी गुण-निदर्शक। ईशावास्योपनिषत् जिस ईश्वर की उपासना सिखाता है, उसी की उपासना वेद भी सिखाता है।

परमात्मा अनंतगुण होने से साधक अपने चित्त का शोधन कर के स्वोपयोगी विशिष्ट गुणों को अनुशीलन के लिए चुन लेता है। वह उसकी देवता होती है।

ऐसी विविध देवताएं साधक के चित्त-विकास के लिए वेदों में वर्णित हैं। उनका स्वरूप वेद-स्वाध्याय-मूलक ध्यानसमाधि से साक्षात्कृत होता है।

* * *

दोषों की तरफ न देखना यह भी दोष-निरसनप्रक्रिया है। यह दोष न देखना हमने वेद में और माता में ही देखा। मां को लगता है मानो मेरा लडका जैसे अद्वितीय ही हो। तुम पापी हो और अमुक-अमुक करोगे तो छूटोगे ऐसा वेद नहीं कहता। तू ब्रह्म है ऐसा कहता है, यानी गुण-दोष से अलग। दूसरे किसी साहित्य में हमने यह देखा नहीं।

—विनोबा

वेद अक्षरराशि

विनोबा

वेद के विषय में कहा गया है कि वेद अक्षरराशि है। शब्दराशि भी नहीं। उसका अगर आप पदच्छेद करते हैं, तो वह आपका भाष्य होगा। एक दफा आर्य-समाजी और सनातनी लोगों में चर्चा चली। आर्यसमाजियों का सिद्धांत है कि भगवान की प्रतिमा नहीं हो सकती। मूर्तिपूजा नहीं। जैसे मुसलमानों में है। उसके लिए वेद के एक श्लोक का उन्होंने आधार दिया – न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यशः – जिसका नाम ही बडा यशस्वी है, उसकी कोई प्रतिमा नहीं। इसलिए भगवान की मूर्ति मत बनाओ, नाम लिया करो। इसका उत्तर सनातनियों ने दिया – नतस्य प्रतिमा अस्ति – जो नम्र है, उसके लिए भगवान की प्रतिमा है।

इसका अर्थ यही हुआ कि यह अपना-अपना भाष्य है। दोनों सही हो सकते हैं, पर वे हैं भाष्य। और जिसने पदच्छेद किया, उसने भाष्य किया। भाष्य प्रमाण नहीं, अक्षर प्रमाण है। तर्जुमा तो विलकुल ही काम का नहीं। अंग्रेजी में तर्जुमा करेंगे, तो अग्नि का क्या तर्जुमा करेंगे? अग्नि यानी फायर और वह्नि यानी फायर! अंग्रेजी में एक ही शब्द है फायर। लेकिन वेद का जो पहला मंत्र है – अग्निमीळे पुरोहितम्, वहां अग्नि की जगह वह्नि नहीं चलेगा – वह्निमीळे पुरोहितम् नहीं चलेगा। इसलिए, तर्जुमा कैसे करेंगे? और जितना भाष्य है, वह वेद नहीं; पदच्छेद भी वेद नहीं; संहिता यानी अक्षर वेद है। वह भी कैसा? सारा एकसाथ लिखा हुआ। शब्दों की आप व्याख्या करेंगे, तो उसके लिए ऋग्वेद जिम्मेवार नहीं, आप जिम्मेवार हैं। बाबा पदच्छेद करेगा, तो वह बाबा का ही वेद होगा।

इंग्लैंड में ग्रिफिथ नाम का लेखक हो गया। उसने रामायण का, भारत का और वेद का तर्जुमा किया। सायणाचार्य ने वेद पर भाष्य लिखा। सायण हो गये

चार-सौ साल पहले और वेद हो गया दस-हजार साल पहले। ऐसे ही मॅक्समूलर ने भी भाष्य लिखा है। वह सब उनका अपना-अपना भाष्य है।

मा नो दीर्घा अभि नशन्तमिस्रा

ये दीर्घ तमिस्राएं हमें तकलीफ न दें। तमिस्रा यानी रात्री। उस पर से लोकमान्य ने अर्थ निकाला कि वैदिक ऋषि उत्तर ध्रुव पर रहते थे। वहां छः माह की रात्रि होती है, इसलिए ऋषि भगवान से प्रार्थना करते थे कि इन दीर्घ रात्रियों से हमें मुक्ति दो। यह आधिभौतिक अर्थ हुआ। आध्यात्मिक अर्थ करते तो होता – इस अविद्यारूपी दीर्घ रात्रि से, जिसमें से हम सैकडों जन्म ले कर बह रहे हैं, हमें मुक्त कर।

इस प्रकार अनेक प्रकार का संशोधन, ऐतिहासिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक भाष्य हो सकता है। इसलिए बाबा ने इतना ही किया कि जितने मंत्र बाबा को कंठस्थ थे, उनमें से थोडे-से ले कर इकट्ठा प्रकाशित कर दिये।

पहले चारों वेद इकट्ठा थे। इसलिए पढना कठिन होता था। व्यास भगवान ने चार विभागों में वेद बांट दिया। व्यास का अर्थ है, विभाजन करनेवाला। इसवास्ते वेद का पठन आसान हो गया। हमने वेद को छोटा कर के रखा। ऋग्वेद में १०,५५८ मंत्र हैं। हमने उसका अष्टमांश किया। अष्टमांश काढा। आयुर्वेद में 'क्वाथ' कहते हैं। 'क्वाथ' यानी काढा। कभी षोडशांश काढा होता है, कभी अष्टमांश। हमने अष्टमांश किया – १३१९ मंत्र चुन कर लिये। १३१९ 'हार्ड' नंबर है। जिस संख्या को, उसी संख्या के या 1 संख्या के अलावा और तीसरी किसी संख्या से निःशेष भाग नहीं दिया जा सकता, उसे हार्ड नंबर कहते हैं। जैसे ७३ है। ७३ को या तो १ से या ७३ से ही भाग दिया जा सकता है। वैसे ही १३१९ है। कुल वेद का अष्टमांश। उतना अलग निकाल कर हमने प्रकाशित किया, ताकि पठन के लिए आसान हो। इतना ही हमने किया।

★

१.८.१९७२

ऋग्वेद-सारः

मंडल	मंत्र	विभाग	प्रमुख ऋषि या देवता	पृष्ठ
१	२८३	२४	--	१
२	१०८	८	ऋषि – गृत्समद	२२
३	६३	६	– विश्वामित्र	३२
४	७३	५	– वामदेव	३८
५	८३	६	– अत्रि	४४
६	९७	९	– भरद्वाज	५०
७	१०३	८	– वसिष्ठ	५९
८	१४३	१२	--	६८
९	८३	६	देवता – पवमान	७९
१०	२८३	२४	--	८५

प्रथमं मंडलम्

(१)

मधुच्छंदा: १–१५ । अग्नि: १–९ मित्रावरुणौ १०–१२ सरस्वती १३–१५

१ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम्
२ अग्नि: पूर्वेभिर् ऋषिभि: ईड्यो नूतनैरुत । स देवाँ एह वक्षति
३ अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम्
४ अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वत: परिभूरसि । स इद् देवेषु गच्छति
५ अग्निर्होता कविक्रतु: सत्यश्चित्रश्रवस्तम: । देवो देवेभिरा गमत्
६ यदंग दाशुषे त्वं अग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत् तत् सत्यमंगिर:
७ उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि
८ राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम् । वर्धमानं स्वे दमे
९ स न: पितेव सूनवे अग्ने सूपायनो भव । सचस्वा न: स्वस्तये
१० मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् । धियं घृताचीं साधन्ता
११ ऋतेन मित्रावरुणौ ऋतावृधावृतस्पृशा । क्रतुं बृहन्तमाशाथे
१२ कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अपसम्
१३ पावका न: सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसु:
१४ चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती
१५ महो अर्ण: सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति

(२)

मधुच्छंदा: १–९ जेता १० । इंद्र: १–३, ५–१० मरुत: ४

१ सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे । जुहूमसि द्यविद्यवि
२ स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरंध्याम् । गमद्वाजेभिरा स नः
३ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः
४ आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे । दधाना नाम यज्ञियम्
५ तुंजेतुंजे य उत्तरे स्तोमा इंद्रस्य वज्रिणः । न विंधे अस्य सुष्टुतिम्
६ एवा हि ते विभूतयः ऊतय इंद्र मावते । सद्यश्चित् सन्ति दाशुषे
७ एमेनं सृजता सुते मंदिमिंद्राय मंदिने । चक्रिं विश्वानि चक्रये
८ यत् सानोः सानुमारुहत् भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्
तदिंद्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति
९ तमित् सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये
स शक्र उत नः शकत् इंद्रो वसु दयमानः
१० सख्ये त इंद्र वाजिनः मा भेम शवसस्पते
त्वामभि प्र णोनुमः जेतारमपराजितम्

(३)

मेधातिथि: १–१२ । नराशंस: १ त्वष्टा २ इंद्र: ३ इंद्रावरुणौ ४ सदसस्पति: ५, ६ अग्निर्मरुतश्च ७ इंद्राग्नी ८ अश्विनौ ९ द्यावापृथिव्यौ १०, ११ पृथिवी १२

१ नराशंसमिह प्रियं अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम्
२ इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये । अस्माकमस्तु केवलः

३ इंद्रं प्रातर्हवामहे   इंद्रं प्रयत्यध्वरे । इंद्रं सोमस्य पीतये
४ युवाकु हि शचीनां   युवाकु सुमतीनाम् । भूयाम वाजदाव्नाम्
५ सदसस्पतिमद्भुतं   प्रियमिंद्रस्य काम्यम् । सनिं मेधामयासिषम्
६ यस्मादृते न सिध्यति   यज्ञो विपश्चितश्चन । स धीनां योगमिन्वति
७ य ईंखयन्ति पर्वतान्   तिरः समुद्रमर्णवम् । मरुद्भिरग्न आ गहि
८ तेन सत्येन जागृतं   अधि प्रचेतुने पदे । इंद्राग्नी शर्म यच्छतम्
९ या वां कशा मधुमती   अश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम्
१० मही द्यौः पृथिवी च नः   इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः
११ तयोरिद् घृतवत् पयः   विप्रा रिहन्ति धीतिभिः । गंधर्वस्य ध्रुवे पदे
१२ स्योना पृथिवि भव   अनृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथः

(४)

मेधातिथिः १–१० । विष्णुः १–६ आपः ७–१०

१ अतो देवा अवन्तु नः   यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः
२ इदं विष्णुर् वि चक्रमे   त्रेधा नि दधे पदम् । समूळ्हमस्य पांसुरे
३ त्रीणि पदा वि चक्रमे   विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन्
४ विष्णोः कर्माणि पश्यत   यतो व्रतानि पस्पशे । इंद्रस्य युज्यः सखा
५ तद् विष्णोः परमं पदं   सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम्
६ तद् विप्रासो विपन्यवः   जागृवांसः समिंधते । विष्णोर्यत् परमं पदम्
७ अंबयो यन्त्यध्वभिः   जामयो अध्वरीयताम् । पृंचतीर्मधुना पयः
८ अमूर्या उप सूर्ये   याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्
९ अपो देवीरुप ह्वये   यत्र गावः पिबन्ति नः । सिंधुभ्यः कर्त्वं हविः
१० अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजं   अपामुत प्रशस्तये । देवा भवत वाजिनः

(५)

शुनःशेपः १–११ । कः (प्रजापतिः) १ वरुणः २–११

१ कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम
को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च

२ नहि ते क्षत्रं न सहो न मन्युं वयश्चनामी पतयन्त आपुः
नेमा आपो अनिमिषं चरन्तीः न ये वातस्य प्रमिनन्त्यभ्वम्

३ अबुध्ने राजा वरुणो वनस्य ऊर्ध्वं स्तूपं ददते पूतदक्षः
नीचीनाः स्थुरुपरि बुध्न एषां अस्मे अंतर्निहिताः केतवः स्युः

४ उरुं हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पंथामन्वेतवा उ
अपदे पादा प्रतिधातवेऽकः उतापवक्ता हृदयाविधश्चित्

५ शतं ते राजन् भिषजः सहस्रं उर्वी गभीरा सुमतिष्टे अस्तु
बाधस्व दूरे निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुग्ध्यस्मत्

६ अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा नक्तं ददृश्रे कुह चिद् दिवेयुः
अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि विचाकशच्चंद्रमा नक्तमेति

७ तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वंदमानः तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः
अहेळमानो वरुणेह बोधि उरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः

८ तदिन्नक्तं तद् दिवा मह्यमाहुः तदयं केतो हृद आ वि चष्टे
शुनःशेपो यमह्वद् गृभीतः सो अस्मान् राजा वरुणो मुमोक्तु

९ शुनःशेपो ह्यह्वद् गृभीतः त्रिष्वादित्यं द्रुपदेषु बद्धः
अवैनं राजा वरुणः ससृज्यात् विद्वाँ अदब्धो वि मुमोक्तु पाशान्

१० अव ते हेळो वरुण नमोभिः अव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेतः राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि

११ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मत् अवाधमं वि मध्यमं श्रथाय
अथा वयमादित्य व्रते तव अनागसो अदितये स्याम

(६)

शुनःशेपः १-२१ । वरुणः १-२१

१ यच्चिद्धि ते विशो यथा   प्र देव वरुण व्रतम् । मिनीमसि द्यविद्यवि
२ मा नो वधाय हत्नवे   जिहीळानस्य रीरधः । मा हृणानस्य मन्यवे
३ वि मृळीकाय ते मनः   रथीरश्वं न संदितम् । गीर्भिर्वरुण सीमहि
४ परा हि मे विमन्यवः   पतन्ति वस्यइष्टये । वयो न वसतीरुप
५ कदा क्षत्रश्रियं नरं   आ वरुणं करामहे । मृळीकायोरुचक्षसम्
६ तदित् समानमाशाते   वेनन्ता न प्र युच्छतः । धृतव्रताय दाशुषे
७ वेदा यो वीनां पदं   अंतरिक्षेण पतताम् । वेद नावः समुद्रियः
८ वेद मासो धृतव्रतः   द्वादश प्रजावतः । वेदा य उपजायते
९ वेद वातस्य वर्तनिं   उरोर्ऋष्वस्य बृहतः । वेदा ये अध्यासते
१० नि षसाद धृतव्रतः   वरुणः पस्त्यास्वा । साम्राज्याय सुक्रतुः
११ अतो विश्वान्यद्भुता   चिकित्वाँ अभि पश्यति । कृतानि या च कर्त्वा
१२ स नो विश्वाहा सुक्रतुः आदित्यः सुपथा करत् । प्र ण आयूंषि तारिषत्
१३ बिभ्रद्द्रापिं हिरण्ययं   वरुणो वस्त निर्णिजम् । परि स्पशो नि षेदिरे
१४ न यं दिप्सन्ति दिप्सवः   न द्रुह्वाणो जनानाम् । न देवमभिमातयः
१५ उत यो मानुषेष्वा   यशश्चक्रे असाम्या । अस्माकमुदरेष्वा
१६ परा मे यन्ति धीतयः   गावो न गव्यूतीरनु । इच्छन्तीरुरुचक्षसम्
१७ सं नु वोचावहै पुनः   यतो मे मध्वाभृतम् । होतेव क्षदसे प्रियम्
१८ दर्शं नु विश्वदर्शतं   दर्शं रथमधि क्षमि । एता जुषत मे गिरः
१९ इमं मे वरुण श्रुधि   हवमद्या च मृळय । त्वामवस्युरा चके
२० त्वं विश्वस्य मेधिर   दिवश्च ग्मश्च राजसि । स यामनि प्रति श्रुधि
२१ उदुत्तमं मुमुग्धि नः   वि पाशं मध्यमं चृत । अवाधमानि जीवसे

(७)

शुन:शेप: १–७ । अग्नि: १–४ देवा: ५ उलूखलम् ६ इंद्र: ७

१ वसिष्वा हि मियेध्य वस्त्राण्यूर्जां पते । सेमं नो अध्वरं यज
२ आ हि ष्मा सूनवे पिता आपिर्यजत्यापये । सखा सख्ये वरेण्य:
३ यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे । त्वे इद्धूयते हवि:
४ अथा न उभयेषां अमृत मर्त्यानाम् । मिथ: सन्तु प्रशस्तय:
५ नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्य: नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्य:
यजाम देवान् यदि शक्नवाम मा ज्यायस: शंसमा वृक्षि देवा:
६ यच्चिद्धि त्वं गृहेगृहे उलूखलक युज्यसे
इह द्युमत्तमं वद जयतामिव दुंदुभि:
७ ससन्तु त्या अरातय: बोधन्तु शूर रातय:

(८)

हिरण्यस्तूप: १–१२ । अग्नि: १, २ इंद्र: ३–७ अश्विनौ ८ (पदानां क्रमेण)
अग्नि:, मित्रावरुणौ, रात्रि:; सविता च ९ सविता १०–१२

१ त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं दधासि श्रवसे दिवेदिवे
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने मय: कृणोषि प्रय आ च सूरये
२ त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं वर्मेव स्यूतं परि पासि विश्वत:
स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृत् जीवयाजं यजते सोपमा दिव:
३ इंद्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम्
४ अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष
वाश्रा इव धेनव: स्यंदमाना: अंज: समुद्रमव जग्मुराप:
५ यदिंद्राहन् प्रथमजामहीनां आन्मायिनाममिना: प्रोत माया:
आत्सूर्यं जनयन् द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से

६ अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापः दीर्‌घं तम आशयदिंद्रशत्रुः
७ अहेर्‌यातारं कमपश्य इंद्र हृदि यत् ते जघ्नुषो भीरगच्छत्
नव च यन् नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि
८ क्व त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व त्रयो वंधुरो ये सनीळाः
कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः
९ ह्वयाम्यग्नि प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे
ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये
१० आ कृष्णेन रजसा वर्तमानः निवेशयन्नमृतं मर्‌त्यं च
हिरण्ययेन सविता रथेन आ देवो याति भुवनानि पश्यन्
११ तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्था एका यमस्य भुवने विराषाट्
आणिं न रथ्यममृताधि तस्थुः इह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत्
१२ ये ते पंथाः सवितः पूर्‌व्यासः अरेणवः सुकृता अंतरिक्षे
तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभिः रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव

(९)

कण्वः १–१०। अग्निः १ मरुतः २, ३ ब्रह्मणस्पतिः ४ वरुणमित्रार्यमणः ५, ६
पूषा ७–९ रुद्रः १०

१ ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह
कृधी न ऊर्‌ध्वांचरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः
२ यद्ध यान्ति मरुतः सं ह ब्रुवतेऽध्वन्ना। शृणोति कश्चिदेषाम्
३ मो षु णः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणा वधीत्। पदीष्ट तृष्णया सह
४ तमिद् वोचेमा विदथेषु शंभुवं मंत्रं देवा अनेहसम्
इमां च वाचं प्रतिहर्यथा नरः विश्वेद् वामा वो अश्नवत्

५ मा वो घ्नन्तं मा शपन्तं प्रति वोचे देवयन्तम् । सुम्नैरिद्ध आ विवासे
६ चतुरश्चिद् ददमानात् विभीयादा निधातोः । न दुरुक्ताय स्पृहयेत्
७ यो नः पूषन्नघो वृकः दुःशेव आदिदेशति । अप स्म तं पथो जहि
८ अप त्यं परिपंथिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमधि स्रुतेरज
९ अभि सूयवसं नय न नवज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतूं विदः
१० गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम् । तच्छंयोः सुम्नमीमहे

(१०)

प्रस्कण्वः १–१९ । अग्निः १ अश्विनौ २–४ उषाः ५,६ सूर्यः ७–१९

१ देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसं अग्निमीळे व्युष्टिषु
२ या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम्
३ आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे । युंजाथामश्विना रथम्
४ अभूदु पारमेतवे पंथा ऋतस्य साधुया । अदर्शि वि स्रुतिर्दिवः
५ विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगत् ज्योतिष्कृणोति सूनरी
अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिवः उषा उच्छदप स्रिधः
६ विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरि
सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघे हवम्
७ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम्
८ अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः । सूराय विश्वचक्षसे
९ अदृश्रमस्य केतवः वि रश्मयो जनाँ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा
१० तरणिर्विश्वदर्शतः ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचनम्
११ प्रत्यङ देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान् । प्रत्यङ विश्वं स्वर्दृशे
१२ येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु । त्वं वरुण पश्यसि
१३ वि द्यामेषि रजस्पृथु अहा मिमानो अक्तुभिः । पश्यञ्जन्मानि सूर्य
१४ सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षण

१५ अयुक्त सप्त शुंध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः । ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः

१६ उद् वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्
देवं देवत्रा सूर्यं अगन्म ज्योतिरुत्तमम्

१७ उद्यन्नद्य मित्रमहः आरोहन्नुत्तरां दिवम्
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय

१८ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि
अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि

१९ उदगादयमादित्यः विश्वेन सहसा सह
द्विषन्तं मह्यं रंधयन् मो अहं द्विषते रधम्

(११)

सव्यः १–४ नोधाः ५–८ । इंद्रः १–४, ६, ७ अग्निः ५ मरुतः ८

१ अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतः रघ्वीरिव प्रवणे सस्रुरूतयः
इंद्रो यद् वज्री धृषमाणो अंधसा भिनद्वलस्य परिधींरिव त्रितः

२ यदिन्न्विन्द्र पृथिवी दशभुजिः अहानि विश्वा ततनन्त कृष्टयः
अत्राह ते मघवन् विश्रुतं सहः द्यामनु शवसा बर्हणा भुवत्

३ शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि

४ स इद् वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इंद्रियम्

५ आपृच्छ्यो विश्पतिर्विक्षु वेधाः

६ प्र वो महे महि नमो भरध्वं आंगूष्यं शवसानाय साम
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः अर्चन्तो अंगिरसो गा अविदन्

७ शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः

८ रोदसी आ वदता गणश्रियः नृषाचः शूराः शवसाहिमन्यवः

(१२)

पराशरः १–७ । अग्निः १–७

१ पश्वा न तायुं, गुहा चतन्तं   नमो युजानं, नमो वहन्तम्
२ सजोषा धीराः, पदैरनु ग्मन्   उप त्वा सीदन्, विश्वे यजत्राः
३ अजो न क्षां, दाधार पृथिवीं   तस्तंभ द्यां, मंत्रेभिः सत्यैः
४ प्रिया पदानि, पश्वो नि पाहि   विश्वायुरग्ने, गुहा गुहं गाः
५ साधुर् न गृध्नुरस्तेव शूरः   यातेव भीमस्त्वेषः समत्सु
६ संजानाना उप सीदन्नभिज्ञु   पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन्
रिरिक्वांसस्तन्व कृण्वत स्वाः   सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः
७ रयिर्न यः पितृवित्तो वयोधाः   सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शासुः
स्योनशीरतिथिर् न प्रीणानः   होतेव सद्म विधतो वि तारीत्

(१३)

गौतमः १–८ । अग्निः १ इंद्रः २–६ मरुतः ७,८

१ उपप्रयन्तो अध्वरं   मंत्रं वोचेमाग्नये । आरे अस्मे च शृण्वते
२ यद्ध त्यं मायिनं मृगं   तमु त्वं माययावधीः   अर्चन्ननु स्वराज्यम्
३ सहस्रं साकमर्चत   परि ष्टोभत विंशतिः
शतैनमन्वनोनवुः   इंद्राय ब्रह्मोद्यतं   अर्चन्ननु स्वराज्यम्
४ युक्तस्ते अस्तु दक्षिणः   उत सव्यः शतक्रतो
५ यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते   ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि
आ गा आजदुशना काव्यः सचा   यमस्य जातममृतं यजामहे
६ इंद्रो दधीचो अस्थभिः   वृत्राण्यप्रतिष्कुतः । जघान नवतीर्नव

७ शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः
८ ब्रह्म कृण्वन्तो गोतमासो अर्कैः ऊर्ध्वं नुनुद्र उत्सधिं पिबध्यै

(१४)

गोतमः १–११ । विश्वे देवाः १–११

१ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः अदब्धासो अपरीतास उद्भिदः
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन् अप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे
२ देवानां भद्रा सुमतिर् ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम्
देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे
३ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये
४ स्वस्ति न इंद्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर् दधातु
५ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरंगैस् तुष्टुवांसस् तनूभिः व्यशेम देवहितं यदायुः
६ शतमिन्नु शरदो अंति देवाः यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः
७ अदितिर् द्यौरदितिरंतरिक्षं अदितिर् माता स पिता स पुत्रः
विश्वे देवा अदितिः पंच जनाः अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्
८ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिंधवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः
९ मधु नक्तमुतोषसः मधुमत् पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता
१० मधुमान्नो वनस्पतिः मधुमां अस्तु सूर्यः । माध्वीर् गावो भवन्तु नः
११ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा
शं न इंद्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः

(१५)

गोतमः १–७ । सोमः १–५ उषाः ६ अग्नीषोमौ ७

१ त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूः त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युम्न्यभवो नृचक्षाः

२ गयस्फानो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव

३ सोम रारंधि नो हृदि गावो न यवसेष्वा । मर्य इव स्व ओक्ये

४ सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै

५ त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वाः त्वमपो अजनयस्त्वं गाः
त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ

६ अतारिष्म तमसस्पारमस्य उषा उच्छन्ती वयुना कृणोति
श्रिये छंदो न स्मयते विभाती सुप्रतीका सौमनसायाजीगः

७ यो अग्नीषोमा हविषा सपर्यात् देवद्रीचा मनसा यो घृतेन
तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसः विशे जनाय महि शर्म यच्छतम्

(१६)

कुत्सः १–६, ११,१२ कश्यपः ७ वार्षागिराः ८–१० । अग्निः १–७
मरुत्वान् इंद्रः ८–११ इंद्रः १२

१ भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम्
जीवातवे प्रतरं साधया धियः अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव

२ क इमं वो निण्यमा चिकेत वत्सो मातॄर्जनयत स्वधाभिः
बह्वीनां गर्भो अपसामुपस्थात् महान् कविर्निश्चरति स्वधावान्

३ स पूर्वया निविदा कव्यतायोः इमाः प्रजा अजनयन्मनूनाम्
विवस्वता चक्षसा द्यामपश्च देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्

४ रायो बुध्नः संगमनो वसूनां यज्ञस्य केतुर् मन्मसाधनो वेः
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्

५ त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि । अप नः शोशुचदघम्

६ वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण

७ जातवेदसे सुनवाम सोमं अरातीयतो नि दहाति वेदः
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः

८ सो अंगिरोभिरंगिरस्तमो भूत् वृषा वृषभिः सखिभिः सखा सन्
ऋग्मिभिर्ऋग्मी गातुभिर्ज्येष्ठः मरुत्वान् नो भवत्विंद्र ऊती

९ तमूतयो रणयंछूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम्
स विश्वस्य करुणस्येश एकः मरुत्वान् नो भवत्विंद्र ऊती

१० तमप्सन्त शवस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय
सो अंधे चित तमसि ज्योतिर्विदत् मरुत्वान् नो भवत्विंद्र ऊती

११ यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभिः यो धावद्भिर्हूयते यश्च जिग्युभिः
इंद्रं यं विश्वा भुवनाभि संदधुः मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे

१२ अस्य श्रवो नद्यः सप्त बिभ्रति द्यावाक्षामा पृथिवी दर्शतं वपुः
अस्मे सूर्याचंद्रमसाभिचक्षे श्रद्धे कमिंद्र चरतो वितर्तुरम्

(१७)

कुत्सः १–९ । विश्वे देवाः १–४ इंद्राग्नी ५–८ ऋभवः ९

१ सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः
मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो

२ ऋतमर्षन्ति सिंधवः सत्यं तातान सूर्यः

३ अरुणो मा सकृद् वृकः पथा यन्तं ददर्श हि
उज्जिहीते निचाय्य तष्टेव पृष्टयामयी

४ इंद्रं कुत्सो वृत्रहणं शचीपतिं   काटे निवाळ्ह ऋषिरह्वदूतये
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवः   विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन

५ यदिंद्राग्नी मदथः स्वे दुरोणे   यद् ब्रह्मणि राजनि वा यजत्रा
अतः परि वृषणावा हि यातं   अथा सोमस्य पिबतं सुतस्य

६ यदिंद्राग्नी अवमस्यां पृथिव्यां   मध्यमस्यां परमस्यामुत स्थः
अतः परि वृषणावा हि यातं   अथा सोमस्य पिबतं सुतस्य

७ यदिंद्राग्नी दिवि ष्ठो यत् पृथिव्यां   यत् पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु
अतः परि वृषणावा हि यातं   अथा सोमस्य पिबतं सुतस्य

८ इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य   येभिः सपित्वं पितरो न आसन्
विष्ट्वी शमी तरणित्वेन वाघतः   मर्तासः सन्तो अमृतत्वमानशुः

(१८)

कुत्सः १–१७ । अश्विनौ १ उषाः २–७ रुद्रः ८–११ सूर्यः १२–१७

१ युवोर्दानाय सुभरा असश्चतः   रथमा तस्थुर्वचसं न मन्तवे
याभिर् धियोऽवथः कर्मन्निष्टये   ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्

२ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात्   चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा
यथा प्रसूता सवितुः सवाय   एवा रात्र्युषसे योनिमारैक्

३ भास्वती नेत्री सूनृतानां   अचेति चित्रा वि दुरो न आवः
प्रार्प्या जगद्व्यु नो रायो अख्यत्   उषा अजीगर् भुवनानि विश्वा

४ जिह्मश्ये चरितवे मघोनी   आभोगय इष्टये राय उ त्वम्
दभ्रं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्षे   उषा अजीगर् भुवनानि विश्वा

५ क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीयै   इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै
विसदृशा जीविताभिप्रचक्षे   उषा अजीगर् भुवनानि विश्वा

६ एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि   व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्वः   उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ

७ उदीर्ध्वं जीवो असुर् न आगात्   अप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति
आरैक् पंथां यातवे सूर्याय   अगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः

८ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने   क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे   विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्

९ इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः   स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम्
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं   त्मने तोकाय तनयाय मृळ

१० मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं   मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं   मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः

११ मा नस्तोके तनये मा न आयौ   मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः
वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीः   हविष्मन्तः सदामित् त्वा हवामहे

१२ चित्रं देवानामुदगादनीकं   चक्षुर् मित्रस्य वरुणस्याग्नेः
आप्रा द्यावापृथिवी अंतरिक्षं   सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च

१३ सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां   मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि   वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्

१४ भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य   चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः   परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः

१५ तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं   मध्या कर्तोर्विततं सं जभार
यदेदयुक्त हरितः सधस्थात्   आद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै

१६ तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे   सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे
अनंतमन्यद् रुशदस्य पाजः   कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति

१७ अद्या देवा उदिता सूर्यस्य   निरंहसः पिपृता निरवद्यात्
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तां   अदितिः सिंधुः पृथिवी उत द्यौः

(१९)

कक्षीवान् १–९ रोमशा १० परुच्छेपः ११–१५। अश्विनौ १–४ विश्वे देवाः ५, १५ उषाः ६, ७ दानस्तुतिः ८, ९ इंद्रः १०,१२,१३ अग्निः ११ ऋषयः १४

१ तद् वां नरा सनये दंस उग्रं आविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम्
दध्यङ्ह यन्मध्वाथर्वणो वां अश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच
२ युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर् युवानं चक्रथुः शचीभिः
३ आथर्वणायाश्विना दधीचे अश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम्
स वां मधु प्र वोचदृतायन् त्वाष्ट्रं यद् दस्रावपिकक्ष्यं वाम्
४ अध स्वप्नस्य निर्विदे अभुंजतश्च रेवतः। उभा ता वस्त्रि नश्यतः
५ आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नंशे
६ सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा आविस्तन्वं कृणुषे दृशे कम्
७ उपो अदर्शि शुंध्युवो न वक्षः नोधा इवाविरकृत प्रियाणि
८ नाकस्य पृष्ठे अधि तिष्ठति श्रितः यः पृणाति स ह देवेषु गच्छति
तस्मा आपो घृतमर्षन्ति सिंधवः तस्मा इयं दक्षिणा पिन्वते सदा
९ मा पृणन्तो दुरितमेन आरन् मा जारिषुः सूरयः सुव्रतासः
१० उपोप मे परा मृश मा मे दभ्राणि मन्यथाः
सर्वाहमस्मि रोमशा गंधारीणामिवाविका
११ तमस्य पृक्षमुपरासु धीमहि नक्तं यः सुदर्शतरो दिवातरात्
१२ पाहि न इंद्र सुष्टुत स्रिधः अवयाता सदमिद् दुर्मतीनां देवः सन्
हन्ता पापस्य रक्षसः त्राता विप्रस्य मावतः [दुर्मतीनाम्
१३ उभे पुनामि रोदसी ऋतेन द्रुहो दहामि सं महीरनिंद्राः
१४ दध्यङ्ह मे जनुषं पूर्वो अंगिराः प्रियमेधः कण्वो अत्रिर्मनुर्विदुः
तेषां देवेष्वायतिः अस्माकं तेषु नाभयः
१५ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्

(२०)

दीर्घतमा: १ – ९ । अग्नि: १ – ६ मित्रावरुणौ ७–९

१ इदमग्ने सुधितं दुर्धितादधि   प्रियादु चिन्मन्मनः प्रेयो अस्तु ते
२ प्र तव्यसीं नव्यसीं धीतिमग्नये   वाचो मतिं सहसः सूनवे भरे
३ तं पृच्छता स जगामा स वेद   स चिकित्वाँ ईयते सो न्वीयते
४ धीरासः पदं कवयो नयन्ति   नाना हृदा रक्षमाणा अजुर्यम्
५ ये पायवो मामतेयं ते अग्ने   पश्यन्तो अंधं दुरितादरक्षन्
रक्ष तान् त्सुकृतो विश्ववेदाः   दिप्सन्त इद् रिपवो नाह देभुः
६ यो नो अग्ने अररिवाँ अघायुः   अरातीवा मर्चयति द्वयेन
मंत्रो गुरुः पुनरस्तु सो अस्मै   अनु मृक्षीष्ट तन्वं दुरुक्तैः
७ भरन्ति वां मन्मना संयता गिरः   अदृप्यता मनसा रेवदाशाथे
८ अचित्तं ब्रह्म जुजुषुर्युवानः
९ अस्माकं ब्रह्म पृतनासु सह्याः

(२१)

दीर्घतमा: १–७ । विष्णुः १–७

१ विष्णोर् नु कं वीर्याणि प्र वोचं   यः पार्थिवानि विममे रजांसि
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं   विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः
२ यस्य त्री पूर्णा मधुना पदानि   अक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यां   एको दाधार भुवनानि विश्वा
३ तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां   नरो यत्र देवयवो मदन्ति
उरुक्रमस्य स हि बंधुरित्था   विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः
४ ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै   यत्र गावो भूरिशृंगा अयासः
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः   परमं पदमव भाति भूरि

५ द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशः अभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति
तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतयन्तः पतत्रिणः

६ चतुर्भिः साकं नवतिं च नामभिः चक्रं न वृत्तं व्यतीँरवीविपत्
बृहच्छरीरो विमिमान ऋक्वभिः युवाकुमारः प्रत्येत्याहवम्

७ तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथा विद ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन
आस्य जानन्तो नाम चिद् विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे

(२२)

दीर्घतमाः १–९ । अश्विनौ १, २ द्यावापृथिवी ३–६ ऋभवः ७, ८ अश्वः ९

१ आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवं मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम्
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा

२ दीर्घतमा मामतेयः जुजुर्वान् दशमे युगे
अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः

३ ते सूनवः स्वपसः सुदंससः मही जज्ञुर्मातरा पूर्वचित्तये

४ ते मायिनो ममिरे सुप्रचेतसः जामी सयोनी मिथुना समोकसा
नव्यंनव्यं तंतुमा तन्वते दिवि समुद्रे अंतः कवयः सुदीतयः

५ तद् राधो अद्य सवितुर्वरेण्यं वयं देवस्य प्रसवे मनामहे

६ स वह्निः पुत्रः पित्रोः पवित्रवान् पुनाति धीरो भुवनानि मायया

७ न निंदिम चमसं यो महाकुलः अग्ने भ्रातर्द्रुण इद् भूतिमूदिम

८ आपो भूयिष्ठा इत्येको अब्रवीत् अग्निर्भूयिष्ठ इत्यन्यो अब्रवीत्
वधर्यन्तीं वहुभ्यः प्रैको अब्रवीत् ऋता वदन्तश्चमसाँ अपिंशत

९ न वा उ एतन् म्रियसे न रिष्यसि देवाँ इदेषि पथिभिः सुगेभिः

(२३)

दीर्घतमा: १–२० । विश्वे देवा: १–१४ वाक् १५ सूर्य: १६ संवत्सरकाल-
चक्रम् १७ सरस्वती १८ साध्या: १९ पर्जन्याग्नय: २०

१ अस्य वामस्य पलितस्य होतु: तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्न:
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्य अत्रापश्यं विश्पतिं सप्तपुत्रम्

२ सप्त युंजन्ति रथमेकचक्रं एको अश्वो वहति सप्तनामा
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थु:

३ को ददर्श प्रथमं जायमानं अस्थन्वन्तं यदनस्था विभर्ति
भूम्या असुरसृगात्मा क्व स्वित् को विद्वांसमुप गात् प्रष्टुमेतत्

४ तिस्रो मातॄस् त्रीन् पितॄन् बिभ्रदेक: ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमव ग्लापयन्ति
मंत्रयन्ते दिवो अमुष्य पृष्ठे विश्वविदं वाचमविश्वमिन्वाम्

५ पंचपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहु: परे अर्धे पुरीषिणम्
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षळर आहुरर्पितम्

६ स्त्रिय: सतीस्ताँ उ मे पुंस आहु: पश्यदक्षण्वान्न वि चेतदंध:
कविर्य: पुत्र: स ईमा चिकेत यस्ता विजानात् स पितुष्पितासत्

७ ये अर्वांचस्ताँ उ परांच आहु: ये परांचस्ताँ उ अर्वाच आहु:
इंद्रश्च या चक्रथु: सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति

८ द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते
तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति

९ अपश्यं गोपामनिपद्यमानं आ च परा च पथिभिश्चरन्तम्
स सध्रीची: स विषूचीर्वसान: आ वरीवर्ति भुवनेष्वंत:

१० य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्
स मातुर्योना परिवीतो अंत: बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश

११ इयं वेदि: परो अंत: पृथिव्या: अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेत: ब्रह्मायं वाच: परमं व्योम

१२ ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्त इमे समासते

१३ सूयवसाद् भगवती हि भूयाः अथो वयं भगवन्तः स्याम
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिव शुद्धमुदकमाचरन्ती

१४ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षती एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी
अष्टापदी नवपदी वभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्

१५ चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः
गुहा त्रीणि निहिता नेंगयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति

१६ इंद्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुः अथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्
एकं सद् विप्रा वहुधा वदन्ति अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः

१७ द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत
तस्मिन् त्साकं त्रिशता न शंकवः अर्पिताः षष्टिर् न चलाचलासः

१८ यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूः येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि
यो रत्नधा वसुविद् यः सुदत्रः सरस्वति तमिह धातवे कः

१९ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः

२० समानमेतदुदकं उच्चैत्यव चाहभिः
भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः

(२४)

अगस्त्यः १–६, ८–१७ अगस्त्यशिष्यो ब्रह्मचारी ७। इंद्रः १–६ अगस्त्यः ७ अश्विनौ ८–१० द्यावापृथिव्यौ ११ अन्नम् १२–१४ अग्निः १५ बृहस्पतिः १६ सूर्यः १७

१ कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर् युवानः

२ या नु दधृष्वान् कृणवै मनीषा

३ वयमद्येंद्रस्य प्रेष्ठाः   वयं श्वो वोचेमहि समर्ये

४ न नूनमस्ति नो श्वः   कस्तद् वेद यदद्भुतम्
अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्यं   उताधीतं वि नश्यति

५ यज्ञो हि ष्मेंद्रं कश्चिदृन्धन्   जुहुराणश्चिन्मनसा परियन्
तीर्थे नाच्छा तातृषाणमोकः   दीर्घो न सिध्रमा कृणोत्यध्वा

६ त्वं राजेंद्र ये च देवाः   रक्षा नॄन् पाह्यसुर त्वमस्मान्
त्वं सत्पतिर् मघवा नस्तरुत्रः   त्वं सत्यो वसवानः सहोदाः

७ अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः   प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः
उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष   सत्या देवेष्वाशिषो जगाम

८ युवमेतं चक्रथुः सिंधुषु प्लवं   आत्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्र्याय कम्

९ मा वां वृको मा वृकीरा दधर्षीत्   मा परि वर्क्तमुत माति धक्तम्

१० अतारिष्म तमसस्पारमस्य   प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि
एह यातं पथिभिर् देवयानैः   विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्

११ देवान् वा यच्चकृमा कच्चिदागः   सखायं वा सदमिज्जास्पतिं वा
इयं धीर्भूया अवयानमेषां   द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात्

१२ पितुं नु स्तोषं   महो धर्माणं तविषीम्

१३ यदपामोषधीनां   परिंशमारिशामहे । वातापे पीव इद् भव

१४ यत् ते सोम गवाशिरः   यवाशिरो भजामहे । वातापे पीव इद् भव

१५ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्   विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः   भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम

१६ सुप्रैतुः सूयवसो न पंथाः   दुर्नियन्तुः परिप्रीतो न मित्रः
अनर्वाणो अभि ये चक्षते नः   अपीवृता अपोर्णुवन्तो अस्थुः

१७ उत् पुरस्तात् सूर्य एति   विश्वदृष्टो अदृष्टहा

द्वितीयं मंडलम्

(१)

गृत्समदः १–८ सोमाहुतिः ९–१३ । अग्निः १–६, ९–१३
देवीर्द्वारः ७ उषासानक्ता ८

१ त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिः त्वमद्भ्यस् त्वमश्मनस्परि
त्वं वनेभ्यस् त्वमोषधीभ्यः त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः
२ तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश्च नो दमे
३ त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्नरः त्वां भ्रात्राय शम्या तनूरुचम्
त्वं पुत्रो भवसि यस्तेऽविधत् त्वं सखा सुशेवः पास्याधृषः
४ त्वं तान् त्सं च प्रति चासि मज्मना अग्ने सुजात प्र च देव रिच्यसे
पृक्षो यदत्र महिना वि ते भुवत् अनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे
५ तमुक्षमाणं रजसि स्व आ दमे चंद्रमिव सुरुचं ह्वार आ दधुः
पृश्न्याः पतरं चितयन्तमक्षभिः पाथो न पायुं जनसी उभे अनु
६ वयमग्ने अर्वता वा सुवीर्यं ब्रह्मणा वा चितयेमा जनाँ अति
अस्माकं द्युम्नमधि पंच कृष्टिषु उच्चा स्वर्णं शुशुचीत दुष्टरम्
७ वि श्रयन्तामुर्विया हूयमानाः द्वारो देवीः सुप्रायणा नमोभिः
व्यचस्वतीर्वि प्रथन्तामजुर्याः वर्णं पुनाना यशसं सुवीरम्
८ साध्वपांसि सनता न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते
तंतुं ततं संवयन्ती समीची यज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती
९ साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि
विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते

१० तं त्वा गीर्भिर् गिर्वणसं द्रविणस्युं द्रविणोदः । सपर्येम सपर्यवः
११ स नो वृष्टिं दिवस्परि स नो वाजमनर्वाणम् । स नः सहस्रिणीरिषः
१२ विश्वा उत त्वया वयं धारा उदन्या इव । अति गाहेमहि द्विषः
१३ त्वं नो असि भारत अग्ने वशाभिरुक्षभिः । अष्टापदीभिराहुतः

(२)

गृत्समदः १–१७ । इंद्रः १–१७

१ दूरे पारे वाणीं वर्धयन्तः इंद्रेषितां धमनिं पप्रथन् नि

२ नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिंद्र दक्षिणा मघोनी
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नः बृहद् वदेम विदथे सुवीराः

३ यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इंद्रः

४ यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहत् यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्
यो अंतरिक्षं विममे वरीयः यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इंद्रः

५ यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरं उतेमाहुर् नैषो अस्तीत्येनम्
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इंद्रः

६ यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावः यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इंद्रः

७ यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासः यं युध्यमाना अवसे हवन्ते
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इंद्रः

८ यः शंवरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविंदत्
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इंद्रः

९ द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुः यो वज्रहस्तः स जनास इंद्रः

१० प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते
असिन्वन् दंष्ट्रैः पितुरत्ति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः

११ यो भोजनं च दयसे च वर्धनं आर्द्रादा शुष्कं मधुमद् दुदोहिथ
स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युक्थ्यः

१२ सुप्रवाचनं तव वीर वीर्यं यदेकेन क्रतुना विंदसे वसु

१३ अवंशे द्यामस्तभायद् बृहन्तं आ रोदसी अपृणदंतरिक्षम्
स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मद इंद्रश्चकार

१४ स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात् सो अस्नातॄनपारयत् स्वस्ति
त उत्स्नाय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मद इंद्रश्चकार

१५ भिनद् वलमंगिरोभिर् गृणानः वि पर्वतस्य दृंहितान्यैरत्
रिणग्रोधांसि कृत्रिमाण्येषां सोमस्य ता मद इंद्रश्चकार

१६ इंद्रमजुर्यं जरयन्तमुक्षितं सनाद् युवानमवसे हवामहे

१७ अमाजूरिव पित्रोः सचा सती समानादा सदसस्त्वामिये भगम्

(३)

गृत्समदः १–१२ । इंद्रः १–१२

१ आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिंद्र याहि आ चतुर्भिरा षड्भिर् हूयमानः
आष्टाभिर् दशभिः सोमपेयं अयं सुतः सुमख मा मृधस्कः

२ आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वाङ् आ चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः
आ पंचाशता सुरथेभिरिंद्र आ षष्ट्या सप्तत्या सोमपेयम्

३ आशीत्या नवत्या याह्यर्वाङ् आ शतेन हरिभिरुह्यमानः
अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोमः इंद्र त्वाया परिषिक्तो मदाय

४ मम ब्रह्मेंद्र याह्यच्छ विश्वा हरी धुरि धिष्वा रथस्य
पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथ अस्मिञ्छूर सवने मादयस्व

५ न म इंद्रेण सख्यं वि योषत् अस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत
उप ज्येष्ठे वरूथे गभस्तौ प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम

६ विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सत्राजिते नृजित उर्वराजिते
अश्वजिते गोजिते अब्जिते भर इंद्राय सोमं यजताय हर्यतम्

७ अभिभुवेऽभिभंगाय वन्वते अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे
तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इंद्राय वोचत

८ सत्रासाहो जनभक्षो जनंसहः च्यवनो युध्मो अनु जोषमुक्षितः
वृतंचयः सहुरिर्विक्ष्वारितः इंद्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या

९ अनानुदो वृषभो दोधतो वधः गंभीर ऋष्वो असमष्टकाव्यः
रध्रचोदः श्नथनो वीळितस्पृथुः इंद्रः सुयज्ञ उषसः स्वर्जनत्

१० यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रिरे धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिणः
अभिस्वरा निषदा गा अवस्यवः इंद्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत

११ इंद्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्

१२ त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मः
तृपत् सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशत्
स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं
सैनं सश्चद् देवो देवं सत्यमिंद्रं सत्य इंदुः

(४)

गृत्समदः १–११ । ब्रह्मणस्पतिः स एव बृहस्पतिः १–११

१ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पते आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्

२ देवाश्चित् ते असुर्यं प्रचेतसः बृहस्पते यज्ञियं भागमानशुः
उस्रा इव सूर्यो ज्योतिषा महः विश्वेषामिज्जनिता ब्रह्मणामसि

३ आ विबाध्या परिरापस्तमांसि च ज्योतिष्मन्तं रथमृतस्य तिष्ठसि
बृहस्पते भीमममित्रदंभनं रक्षोहणं गोत्रभिदं स्वर्विदम् →

४ सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे जनं यस्तुभ्यं दाशान्न तमंहो अश्नवत्
ब्रह्मद्विषस्तपनो मन्युमीरसि बृहस्पते महि तत् ते महित्वनम्

५ न तमंहो न दुरितं कुतश्चन नारातयस्तितिरुर् न द्वयाविनः
विश्वा इदस्माद् ध्वरसो वि बाधसे यं सुगोपा रक्षसि ब्रह्मणस्पते

६ त्वं नो गोपाः पथिकृद् विचक्षणः तव व्रताय मतिभिर् जरामहे
बृहस्पते यो नो अभि ह्वरो दधे स्वा तं मर्मर्तु दुच्छुना हरस्वती

७ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व
विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवाः बृहद् वदेम विदथे सुवीराः

८ अश्मास्यमवतं ब्रह्मणस्पतिः मधुधारमभि यमोजसातृणत्
तमेव विश्वे पपिरे स्वर्दृशः बहु साकं सिसिचुरुत्समुद्रिणम्

९ ऋतज्येन क्षिप्रेण ब्रह्मणस्पतिः यत्र वष्टि प्र तदश्नोति धन्वना
तस्य साध्वीरिषवो याभिरस्यति नृचक्षसो दृशये कर्णयोनयः

१० ऋजुरिच्छंसो वनवद् वनुष्यतः देवयन्निददेवयन्तमभ्यसत्
सुप्रावीरिद् वनवत् पृत्सु दुष्टरं यज्वेदयज्योर्वि भजाति भोजनम्

११ स इज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते धना नृभिः
देवानां यः पितरमाविवासति श्रद्धामना हविषा ब्रह्मणस्पतिम्

(५)

गृत्समदः १–१८ । आदित्याः १–३ वरुणः ४–१४ विश्वे देवाः १५ इंद्रः १६
सरस्वती १७ राका १८

१ त आदित्यास उरवो गभीराः अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः
अंतः पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति

२ न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा
पाक्या चिद् वसवो धीर्या चित् युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम्

३ अदिते मित्र वरुणोत मृळ यद् वो वयं चकृमा कच्चिदागः
उर्वश्यामभयं जोतिरिंद्र मा नो दीर्घा अभि नशन्तमिस्राः

४ इदं कवेरादित्यस्य स्वराजः   विश्वानि सान्त्यभ्यस्तु मह्ना
अति यो मंद्रो यजथाय देवः   सुकीर्ति भिक्षे वरुणस्य भूरेः

५ तव व्रते सुभगासः स्याम   स्वाध्यो वरुण तुष्टुवांसः
उपायन उषसां गोमतीनां   अग्नयो न जरमाणा अनु द्यून्

६ तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्   उरुशंसस्य वरुण प्रणेतः
यूयं नः पुत्रा अदितेरदब्धाः   अभि क्षमध्वं युज्याय देवाः

७ प्र सीमादित्यो असृजद् विधर्ता   ऋतं सिंधवो वरुणस्य यन्ति
न श्राम्यन्ति न वि मुचन्त्येते   वयो न पप्तू रघुया परिज्मन्

८ वि मच्छ्रथाय रशनामिवागः   ऋध्याम ते वरुण खामृतस्य
मा तंतुश्छेदि वयतो धियं मे   मा मात्रा शार्यपसः पुर ऋतोः

९ अपो सु म्यक्ष वरुण भियसं   मत् सम्राळृतावोऽनु मा गृभाय
दामेव वत्साद् वि मुमुग्ध्यंहः   नहि त्वदारे निमिषश्चनेशे

१० मा नो वधैर् वरुण ये त इष्टौ   एनः कृण्वन्तमसुर भ्रीणन्ति
मा ज्योतिषः प्रवसथानि गन्म   वि षू मृधः शिश्रथो जीवसे नः

११ नमः पुरा ते वरुणोत नूनं   उतापरं तुविजात ब्रवाम
त्वे हि कं पर्वते न श्रितानि   अप्रच्युतानि दूळभ व्रतानि

१२ पर ऋणा सावीरध मत्कृतानि   माहं राजन्नन्यकृतेन भोजम्
अव्युष्टा इन्नु भूयसीरुषासः   आ नो जीवान् वरुण तासु शाधि

१३ यो मे राजन् युज्यो वा सखा वा   स्वप्ने भयं भीरवे मह्यमाह
स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा   त्वं तस्माद् वरुण पाह्यस्मान्

१४ माहं मघोनो वरुण प्रियस्य   भूरिदाव्न आ विदं शूनमापेः
मा रायो राजन् त्सुयमादव स्थां   बृहद् वदेम विदथे सुवीराः

१५ हये देवा यूयमिदापयः स्थ   ते मृळत नाधमानाय मह्यम्
मा वो रथो मध्यमवाळृते भूत्   मा युष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म

१६ न मा तमन्न श्रमन्नोत तंद्रत् न वोचाम मा सुनोतेति सोमम्
यो मे पृणाद् यो ददद् यो निबोधात् यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरायत्

१७ सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून्

१८ राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना
सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्

(६)

गृत्समदः १–१२ । रुद्रः १–१२

१ आ ते पितर् मरुतां सुम्नमेतु मा नः सूर्यस्य संदृशो युयोथाः
अभि नो वीरो अर्वति क्षमेत प्र जायेमहि रुद्र प्रजाभिः

२ त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः शतं हिमा अशीय भेषजेभिः
व्यस्मद् द्वेषो वितरं व्यंहः व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः

३ श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो
पर्षि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती रपसो युयोधि

४ मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिः मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती
उन्नो वीराँ अर्पय भेषजेभिः भिषक्तमं त्वा भिषजां शृणोमि

५ प्र बभ्रवे वृषभाय श्वितीचे महो महीं सुष्टुतिमीरयामि
नमस्या कल्मलीकिनं नमोभिः गृणीमसि त्वेषं रुद्रस्य नाम

६ स्थिरेभिरंगैः पुरुरूप उग्रः बभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशे हिरण्यैः
ईशानादस्य भुवनस्य भूरेः न वा उ योषद् रुद्रादसुर्यम्

७ अर्हन् बिभर्षि सायकानि धन्व अर्हन् निष्कं यजतं विश्वरूपम्
अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति

८ स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम्
मृळा जरित्रे रुद्र स्तवानः अन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः

९ कुमारश्चित् पितरं वंदमानं प्रति नानाम रुद्रोपयन्तम्
भूरेर् दातारं सत्पतिं गृणीषे स्तुतस्त्वं भेषजा रास्यस्मे

१० या वो भेषजा मरुत: शुचीनि　या शंतमा वृषणो या मयोभु
यानि मनुरवृणीता पिता न:　ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि

११ परि णो हेती रुद्रस्य वृज्या:　परि त्वेषस्य दुर्मतिर् मही गात्
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व　मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ

१२ एवा बभ्रो वृषभ चेकितान　यथा देव न हृणीषे न हंसि
हवनश्रुन्नो रुद्रेह बोधि　बृहद् वदेम विदथे सुवीरा:

(७)

गृत्समद: १–८। अपांनपात् १–८

१ उपेमसृक्षि वाजयुर्वचस्यां　चनो दधीत नाद्यो गिरो मे
अपां नपादाशुहेमा कुवित् स:　सुपेशसस्करति जोषिषद्धि

२ इमं स्वस्मै हृद आ सुतष्टं　मंत्रं वोचेम कुविदस्य वेदत्
अपां नपादसुर्यस्य मह्ना　विश्वान्यर्यो भुवना जजान

३ समन्या यन्त्युप यन्त्यन्या:　समानमूर्वं नद्य: पृणन्ति
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसं　अपां नपातं परि तस्थुराप:

४ तमस्मेरा युवतयो युवानं　मर्मृज्यमाना: परि यन्त्याप:
स शुक्रेभि: शिक्वभी रेवदस्मे　दीदायानिध्मो घृतनिर्णिगप्सु

५ अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थं　जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसान:
तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्ती:　हिरण्यवर्णा: परि यन्ति यह्वी:

६ हिरण्यरूप: स हिरण्यसंदृक्　अपां नपात् सेदु हिरण्यवर्ण:
हिरण्ययात् परि योनेर्निषद्य　हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै

७ तदस्यानीकमुत चारु नाम　अपीच्यं वर्धते नप्तुरपाम्
यमिंधते युवतय: समित्था　हिरण्यवर्णं घृतमन्नमस्य

८ अस्मै बहूनामवमाय सख्ये　यज्ञैर् विधेम नमसा हविर्भि:
सं सानु मार्ज्मि दिधिषामि बिल्मै:　दधाम्यन्नै: परि वंद ऋग्भि:

(८)

गृत्समदः १–१७। सविता १–५ अश्विनौ ६,७ सोमापूषणौ ८, ९
मित्रावरुणौ १० इंद्रः ११–१३ सरस्वती १४ शकुंतः १५–१७

१ उदु ष्य देवः सविता सवाय शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात्
नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्नं अथाभजद वीतिहोत्रं स्वस्तौ

२ विश्वस्य हि श्रुष्टये देव ऊर्ध्वः प्र वाहवा पृथुपाणिः सिसर्ति
आपश्चिदस्य व्रत आ निमृग्राः अयं चिद् वातो रमते परिज्मन्

३ आशुभिश्चिद्यान् वि मुचाति नूनं अरीरमदतमानं चिदेतोः
अह्यर्षूणां चिन्न्ययाँ अविष्यां अनु व्रतं सवितुर् मोक्यागात्

४ पुनः समव्यद् विततं वयन्ती मध्या कर्तोर् न्यधाच्छक्म धीरः
उत् संहायास्थाद् व्यृतूँरदर्धः अरमतिः सविता देव आगात्

५ समाववर्ति विष्ठितो जिगीषुः विश्वेषां कामश्चरताममाभूत्
शश्वाँ अपो विकृतं हित्व्यागात् अनु व्रतं सवितुर् दैव्यस्य

६ वातेवाजुर्या नद्येव रीतिः अक्षी इव चक्षुषा यातमर्वाक्
हस्ताविव तन्वे शंभविष्ठा पादेव नो नयतं वस्यो अच्छ

७ ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता स्तनाविव पिप्यतं जीवसे नः
नासेव नस्तन्वो रक्षितारा कर्णाविव सुश्रुता भूतमस्मे

८ इमौ देवौ जायमानौ जुषन्त इमौ तमांसि गूहतामजुष्टा
आभ्यामिंद्रः पक्वमामास्वंतः सोमापूषभ्यां जनदुस्त्रियासु

९ सोमापूषणा रजसो विमानं सप्तचक्रं रथमविश्वमिन्वम्
विषूवृतं मनसा युज्यमानं तं जिन्वथो वृषणा पंचरश्मिम्

१० राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आसाते

११ इंद्रो अंग महद् भयं अभी षदप चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः

१२ इंद्रश्च मृळयाति नः न नः पश्चादघं नशत् । भद्रं भवाति नः पुरः

१३ इंद्र आशाभ्यस्परिं सर्वाभ्यो अभयं करत् । जेता शत्रून् विचर्षणिः

१४ अंवितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमंब नस्कृधि

१५ प्रदक्षिणिदभि गृणन्ति कारवः वयो वदन्त ऋतुथा शकुंतयः
उभे वाचौ वदति सामगा इव गायत्रं च त्रैष्टुभं चानु राजति

१६ उद्गातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि
वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्य सर्वतो नः शकुने भद्रमा वद
विश्वतो नः शकुने पुण्यमा वद

१७ आवदंस्त्वं शकुने भद्रमा वद तूष्णीमासीनः सुमतिं चिकिद्धि नः
यदुत्पतन् वदसि कर्करिर् यथा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः

तृतीयं मंडलम्

(१)

विश्वामित्रः १–१० । अग्निः १, २, ६, ८, १० वैश्वानरोऽग्निः ३–५
तिस्रो देव्यः ७ यूपः ९

१ एकं गर्‌भं दधिरे सप्त वाणीः
२ जन्मन्जन्मन् निहितो जातवेदाः   विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्रः

३ नमस्यत हव्यदातिं स्वध्वरं   दुवस्यत दम्यं जातवेदसम्

४ तिस्रो यह्वस्य समिधः परिज्मनः   अग्नेरपुनन्नुशिजो अमृत्यवः
तासामेकामदधुर् मर्त्ये भुजं   ऊँ लोकमु द्वे उप जामिमीयतुः

५ अग्निर् हि देवाँ अमृतो दुवस्यति   अथा धर्माणि सनता न दूदुषत्

६ समित्समित् सुमना बोध्यस्मे   शुचाशुचा सुमतिं रासि वस्वः
आ देव देवान् यजथाय वक्षि   सखा सखीन् त्सुमना यक्ष्यग्ने

७ आ भारती भारतीभिः सजोषाः   इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक्   तिस्रो देवीर् बर्हिरेदं सदन्तु

८ मित्रो अग्निर् भवति यत् समिद्धः   मित्रो होता वरुणो जातवेदाः
मित्रो अध्वर्युरिषिरो दमूनाः   मित्रः सिंधूनामुत पर्वतानाम्

९ युवा सुवासाः परिवीत आगात्   स उ श्रेयान् भवति जायमानः
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति   स्वाध्यो मनसा देवयन्तः

१० अति तृष्टं ववक्षिथ   अथैव सुमना असि
प्रप्रान्ये यन्ति पर्यन्य आसते   येषां सख्ये असि श्रितः

(२)

ऋषभः १ उत्कीलः २ कतः ३ गाथी ४ देवश्रवाः ५ विश्वामित्रः ६–११।
अग्निः १–५,१०,११ वैश्वानरोऽग्निः ६ मरुतः ७ आत्मा ८
विश्वामित्रोपाध्यायः ९

१ त्वं देहि सहस्त्रिणं रयिं नः अद्रोघेण वचसा सत्यमग्ने

२ मा नो अग्नेऽमतये मावीरतायै रीरधः
मागोतायै सहसस्पुत्र मा निदे अप द्वेषांस्या कृधि

३ तपो ष्वग्ने अंतराँ अमित्रान् तपा शंसमररुषः परस्य

४ अग्ने भूरीणि तव जातवेदः देव स्वधावोऽमृतस्य नाम

५ दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि

६ अश्वो न क्रंदंजनिभिः समिध्यते वैश्वानरः कुशिकेभिर् युगेयुगे

७ व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः अग्नेर् भामं मरुतामोज ईमहे

८ अग्निरस्मि जन्मना जातवेदाः घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन्
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानः अजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम

९ शतधारमुत्समक्षीयमाणं विपश्चितं पितरं वक्त्वानाम्
मेळिं मदन्तं पित्रोरुपस्थे तं रोदसी पिपृतं सत्यवाचम्

१० अरण्योर् निहितो जातवेदाः गर्भ इव सुधितो गर्भिणीषु
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिः हविष्मद्भिर् मनुष्येभिरग्निः

११ तनूनपादुच्यते गर्भ आसुरः नराशंसो भवति यद् विजायते
मातरिश्वा यदमिमीत मातरि वातस्य सर्गो अभवत् सरीमणि

(३)

विश्वामित्रः १–११ नद्यः १२ । इंद्रः १–८ नद्यः ९–११ विश्वामित्रः १२

१ इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि
तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानां इंद्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः

२ महि ज्योतिर् निहितं वक्षणासु आमा पक्वं चरति बिभ्रती गौः
विश्वं स्वाद्म संभृतमुस्रियायां यत् सीमिंद्रो अदधाद् भोजनाय

३ इंद्र दृह्य यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः

४ उद् वृह रक्षः सहमूलमिंद्र वृश्चा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि

५ सतः सतः प्रतिमानंपुरोभूः विश्वा वेद जनिमा हन्ति शुष्णम्
प्र णो दिवः पदवीर् गव्युरर्चन् सखा सखीँरमुंचन्निरवद्यात्

६ नि गव्यता मनसा सेदुरर्कैः कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम्

७ यज्ञो हि त इंद्र वर्धनो भूत् उत प्रियः सुतसोमो मियेधः
यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन् यज्ञस्ते वज्रमहिहत्य आवत्

८ न त्वा गभीरः पुरुहूत सिंधुः नाद्रयः परि षन्तो वरन्त

९ प्र पर्वतानामुशती उपस्थात् अश्वे इव विषिते हासमाने
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते

१० रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः
प्र सिंधुमच्छा बृहती मनीषा अवस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः

११ ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन
नि षू नमध्वं भवता सुपाराः अधोअक्षाः सिंधवः स्रोत्याभिः

१२ आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन
नि ते नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते

(४)

विश्वामित्रः १–१६ । इंद्रः १–१६

१ वृजनेन वृजिनान् त्सं पिपेष

२ नामानि ते शतक्रतो   विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे । इंद्राभिमातिषाह्ये

३ इंद्रियाणि शतक्रतो   या ते जनेषु पंचसु । इंद्र तानि त आ वृणे

४ भद्रा वस्त्राण्यर्जुना वसाना   सेयमस्मे सनजा पित्र्या धीः

५ कुविन्मा गोपां करसे जनस्य   कुविद् राजानं मघवन्नृजीषिन्
कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य   कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः

६ द्यामिंद्रो हरिधायसं   पृथिवीं हरिवर्पसम्
अधारयद्धरितोर् भूरि भोजनं   ययोरंतर् हरिश्चरत्

७ गंभीराँ उदधीँरिव   क्रतुं पुष्यसि गा इव

८ उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं   विश्वव्यचसमवतं मतीनाम्
इंद्रं सोमासः प्रदिवि सुतासः   समुद्रं न स्रवत आ विशन्ति

९ उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजाः   यथावशं तन्वं चक्र एषः

१० इमं कामं मंदया गोभिरश्वैः   चंद्रवता राधसा पप्रथश्च

११ शतक्रतुमर्णवं शाकिनं नरं   गिरो म इंद्रमुप यन्ति विश्वतः
वाजसनिं पूर्भिदं तूर्णिमप्तुरं   धामसाचमभिषाचं स्वर्विदम्

१२ रूपंरूपं मघवा बोभवीति   मायाः कृण्वानस्तन्वं परि स्वाम्

१३ महाँ ऋषिर्देवजा देवजूतः   अस्तभ्नात् सिंधुमर्णवं नृचक्षाः
विश्वामित्रो यदवहत् सुदासं   अप्रियायत कुशिकेभिरिंद्रः

१४ विश्वामित्रस्य रक्षति   ब्रह्मेदं भारतं जनम्

१५ किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावः   नाशिरं दुह्रे न तपन्ति घर्मम्

१६ बलं धेहि तनूषु नः   बलमिंद्रानळुत्सु नः
बलं तोकाय तनयाय जीवसे   त्वं हि बलदा असि

(५)

प्रजापतिः १–६ विश्वामित्रः ७ । विश्वे देवाः १–७

१ को अद्धा वेद क इह प्र वोचत् देवाँ अच्छा पथ्या का समेति
ददृश्र एषामवमा सदांसि परेषु या गुह्येषु व्रतेषु

२ सदा सुगः पितुमाँ अस्तु पंथाः मध्वा देवा ओषधीः सं पिपृक्त

३ मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवाः मा पूर्वे अग्ने पितरः पदज्ञाः
पुराण्योः सद्मनोः केतुरंतः महद् देवानामसुरत्वमेकम्

४ वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः शम्यच्छा दीद्ये पूर्व्याणि
समिद्धे अग्नावृतमिद् वदेम महद् देवानामसुरत्वमेकम्

५ न ता मिनन्ति मायिनो न धीराः व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि
न रोदसी अद्रुहा वेद्याभिः न पर्वता निनमे तस्थिवांसः

६ षड् भाराँ एको अचरन् बिभर्ति ऋतं वर्षिष्ठमुप गाव आगुः
तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्याः गुहा द्वे निहिते दर्श्येका

७ या ते अग्ने पर्वतस्येव धारा असश्चन्ती पीपयद् देव चित्रा
तामस्मभ्यं प्रमतिं जातवेदः वसो रास्व सुमतिं विश्वजन्याम्

(६)

विश्वामित्रः १–७। अश्विनौ १ मित्रः २–५ उषाः ६ सविता ७

१ पुनः कृण्वानाः सख्या शिवानि   मध्वा मदेम सह नू समानाः

२ मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणः   मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्
मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे   मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत

३ प्र स मित्र मर्तो अस्तु प्रयस्वान्   यस्त आदित्य शिक्षति व्रतेन
न हन्यते न जीयते त्वोतः   नैनमंहो अश्नोत्यंतितो न दूरात्

४ अनमीवास इळया मदन्तः   मितज्ञवो वरिमन्ना पृथिव्याः
आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तः   वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम

५ अयं मित्रो नमस्यः सुशेवः   राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्य   अपि भद्रे सौमनसे स्याम

६ उषः प्रतीची भुवनानि विश्वा   ऊर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः
समानमर्थं चरणीयमाना   चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व

७ तत् सवितुर् वरेण्यं   भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्

चतुर्थं मंडलम्

(१)

वामदेवः १–१६ । अग्निः १–७, ११–१६ वैश्वानरोऽग्निः ८–१०

१ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणः वीहि मृळीकं सुहवो न एधि

२ नेशत् तमो दुधितं रोचत द्यौः उद् देव्या उषसो भानुरर्त
आ सूर्यो बृहतस् तिष्ठदज्रान् ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्

३ विश्वेषामदितिर् यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर् मानुषाणाम्
अग्निर्देवानामव आवृणानः सुमृळीको भवतु जातवेदाः

४ यस्त इध्मं जभरत् सिष्विदानः मूर्धानं वा ततपते त्वाया
भुवस्तस्य स्वतवाँः पायुरग्ने विश्वस्मात् सीमघायत उरुष्य

५ चित्तिमचित्तिं चिनवद् वि विद्वान्… दितिं च रास्वादितिमुरुष्य

६ क्रीळन्तस्त्वा सुमनसः सपेम

७ अस्वप्नजस्तरणयः सुशेवाः अतंद्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः
ते पायवः सध्र्यंचो निषद्य अग्ने तव नः पान्त्वमूर

८ अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः
पापासः सन्तो अनृता असत्याः इदं पदमजनता गभीरम्

९ ऋतं वोचे नमसा पृच्छ्यमानः

१० अनिरेण वचसा फल्ग्वेन प्रतीत्येन कृधुनातृपासः
अधा ते अग्ने किमिहा वदन्ति अनायुधास आसता सचन्ताम्

११ अग्निर्मंद्रो मधुवचा ऋतावा

१२ ऋतावानं विचेतसं   पश्यन्तो द्यामिव स्तृभिः
विश्वेषामध्वराणां   हस्कर्तारं दमेदमे

१३ स होता सेदु दूत्यं   चिकित्वाँ अंतरीयते । विद्वाँ आरोधनं दिवः

१४ घृतं न पूतं तनूररेपाः   शुचि हिरण्यम्
तत् ते रुक्मो न   रोचत स्वधावः

१५ यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठ   अचित्तिभिश्चकृमा कच्चिदागः
कृधी ष्वस्माँ अदितेरनागान्   व्येनांसि शिश्रथो विष्वगग्ने

१६ यथा ह त्यद् वसवो गौर्यं चित्   पदि षितामसुंचता यजत्राः
एवो ष्वस्मन्मुंचता व्यंहः   प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः

(२)

वामदेवः १–१९ । इंद्रः १–१३,१५,१६,१८,१९, (ऋतं वा ६,७ आत्मा वा १२,१३) श्येनः १४ इंद्रोषसौ १७

१ आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं   भुवत् ते कुत्सः सख्ये निकामः
स्वे योनौ नि षदतं सरूपा   वि वां चिकित्सदृतचिद्ध नारी

२ नू ष्टुत इंद्र नू गृणानः   इषं जरित्रे नद्यो न पीपेः
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं   धिया स्याम रथ्यः सदासाः

३ त्राता नो बोधि ददृशान आपिः   अभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम्
सखा पिता पितृतमः पितॄणां   कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः

४ नाहमतो निरया दुर्गहैतत्   तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि
बहूनि मे अकृता कर्त्वानि   युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै

५ अवर्त्या शुन आंत्राणि पेचे   न देवेषु विविदे मर्डितारम्
अपश्यं जायाममहीयमानां   अधा मे श्येनो मध्वा जभार

६ ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीः ऋतस्य धीतिर् वृजिनानि हन्ति
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः

७ ऋतं येमान ऋतमिद् वनोति ऋतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः
ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ऋताय धेनू परमे दुहाते

८ भूयसा वस्नमचरत् कनीयः अविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन्
स भूयसा कनीयो नारिरेचीत् दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम्

९ क इमं दशभिर् मम इंद्रं क्रीणाति धेनुभिः
यदा वृत्राणि जंघनत् अथैनं मे पुनर्ददत्

१० न तं जिनन्ति बहवो न दभ्राः उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत्
प्रियः सुकृत् प्रिय इंद्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी

११ न रेवता पणिना सख्यमिंद्रः असुन्वता सुतपाः सं गृणीते

१२ अहं मनुरभवं सूर्यश्च अहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः
अहं कुत्समार्जुनेयं न्यृंजे अहं कविरुशना पश्यता मा

१३ अहं भूमिमददामार्याय अहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय
अहमपो अनयं वावशानाः मम देवासो अनु केतमायन्

१४ गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदं अहं देवानां जनिमानि विश्वा
शतं मा पुर आयसीररक्षन् अध श्येनो जवसा निरदीयम्

१५ श्रावयेदस्य कर्णा वाजयध्यै जुष्टामनु प्र दिशं मंदयध्यै

१६ नकिरिंद्र त्वदुत्तरः न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन् । नकिरेवा यथा त्वम्

१७ दिवश्चिद् घा दुहितरं महान् महीयमानाम् । उषासमिंद्र सं पिणक्

१८ अनु द्वा जहिता नयः अंधं श्रोणं च वृत्रहन् । न तत् ते सुम्नमष्टवे

१९ भूरिदा भूरि देहि नः मा दभ्रं भूर्या भर । भूरि घेदिंद्र दित्ससि

(३)

वामदेव: १-१० त्रसदस्यु: ११, १२। ऋभवः १-४ दधिक्रा: ५-८ सूर्य: ९
गौ: १० वरुण: ११ त्रसदस्यु: १२

१ ज्येष्ठ आह चमसा द्वा करेति कनीयान् त्रीन् कृणवामेत्याह
कनिष्ठ आह चतुरस्करेति त्वष्ट ऋभवस्तत् पनयद् वचो वः

२ सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुः

३ न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः

४ स वाज्यर्वा स ऋषिर् वचस्यया स शूरो अस्ता पृतनासु दुष्टरः
स रायस्पोषं स सुवीर्यं दधे यं वाजो विभ्वाँ ऋभवो यमाविषुः

५ दधिक्राव्ण इदु नु चर्किराम विश्वा इन्मामुषसः सूदयन्तु
अपामग्नेरुषसः सूर्यस्य वृहस्पतेरांगिरसस्य जिष्णोः

६ सत्वा भरिषो गविषो दुवन्यसत् श्रवस्यादिष उषसस्तुरण्यसत्
सत्यो द्रवो द्रवरः पतंगरः दधिक्रावेषमूर्जं स्वर्जनत्

७ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनु वाति प्रगर्धिनः
श्येनस्येव ध्रजतो अंकसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः

८ उत स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां बद्धो अपिकक्ष आसनि
क्रतुं दधिक्रा अनु संतवीत्वत् पथामंकांस्यन्वापनीफणत्

९ हंसः शुचिषद् वसुरंतरिक्षसत् होता वेदिषदतिथिर् दुरोणसत्
नृषद् वरसदृतसद् व्योमसत् अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्

१० सा नो दुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः

११ मम द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य विश्वायोर् विश्वे अमृता यथा नः
क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवाः राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः

१२ अस्माकमत्र पितरस्त आसन् सप्त ऋषयो दौर्गहे बध्यमाने
त आयजन्त त्रसदस्युमस्याः इंद्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम्

(४)

वामदेवः १–१२ । अश्विनौ १ बृहस्पतिः २ उषाः ३–५ सविता ६–१२

१ मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः

२ तस्मै विशः स्वयमेवा नमन्ते यस्मिन् ब्रह्मा राजनि पूर्व एति

३ इदमु त्यत् पुरुतमं पुरस्तात् ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात्
नूनं दिवो दुहितरो विभातीः गातुं कृणवन्नुषसो जनाय

४ उच्छन्तीरद्य चितयन्त भोजान् राधोदेयायोषसो मघोनीः
अचित्रे अंतः पणयः ससन्तु अबुध्यमानास्तमसो विमध्ये

५ यावयद्द्वेषसं त्वा चिकित्वित् सूनृतावरि । प्रति स्तोमैरभुत्स्महि

६ तद्देवस्य सवितुर्वार्यं महत् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः
छर्दिर्येन दाशुषे यच्छति त्मना तन्नो महाँ उदयान् देवो अक्तुभिः

७ दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशंगं द्रापिं प्रति मुंचते कविः
विचक्षणः प्रथयन्नापृणन्नुरु अजीजनत् सविता सुम्नमुक्थ्यम्

८ आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे
प्र बाहू अस्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत्

९ अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकशत् व्रतानि देवः सविताभि रक्षते
प्रास्राग्बाहू भुवनस्य प्रजाभ्यः धृतव्रतो महो अज्मस्य राजति

१० त्रिरंतरिक्षं सविता महित्वना त्री रजांसि परिभूस्त्रीणि रोचना
तिस्रो दिवः पृथिवीस् तिस्र इन्वति त्रिभिर् व्रतैरभि नो रक्षति त्मना

११ बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनः जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी
स नो देवः सविता शर्म यच्छतु अस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः

१२ आगन् देव ऋतुभिर् वर्धतु क्षयं दधातु नः सविता सुप्रजामिषम्
स नः क्षपाभिरहभिश्च जिन्वतु प्रजावन्तं रयिमस्मे समिन्वतु

(५)

वामदेवः १–१४ । द्यावापृथिवी १ सीता २ शुनासीरौ ३ घृतस्तुतिः ४–१४

१ स इत् स्वपा भुवनेष्वास य इमे द्यावापृथिवी जजान
उर्वी गभीरे रजसी सुमेके अवंशे धीरः शच्या समैरत्

२ अर्वाची सुभगे भव सीते वंदामहे त्वा
यथा नः सुभगासति यथा नः सुफलासति

३ शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः
शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्

४ समुद्रादूर्मिर् मधुमाँ उदारत् उपांशुना-सममृतत्वमानट्
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः

५ वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्य अस्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृंगोऽवमीद् गौर एतत्

६ चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादाः द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश

७ त्रिधा हितं पणिभिर् गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविंदन्
इंद्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः

८ एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्रात् शतव्रजा रिपुणा नावचक्षे
घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्

९ सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनाः अंतर्हृदा मनसा पूयमानाः
एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणोरीषमाणाः

१० सिंधोरिव प्राध्वने शूघनासः वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिंदन्नूर्मिभिः पिन्वमानः

११ अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः

१२ कन्या इव वहतुमेतवा ऊँ अंज्यंजाना अभि चाकशीमि
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञः घृतस्य धारा अभि तत् पवन्ते

१३ अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिं अस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त
इमं यज्ञं नयत देवता नः घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते

१४ धामन् ते विश्वं भुवनमधि श्रितं अंतः समुद्रे हृद्यंतरायुषि
अपामनीके समिथे य आभृतः तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्

पंचमं मंडलम्

(१)

बुधगविष्ठिरौ १–३ कुमारः ४–६ वसुश्रुतः ७–१० इषः ११ गयः१२ सुतंभरः १३, १४ वव्रिः १५, १६ वसूयवः १७ अश्वमेधः १८ विश्ववारा १९। अग्निः १–१९

१ अबोधि होता यजथाय देवान् ऊर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात्
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजः महान् देवस्तमसो निरमोचि

२ अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति

३ दमेदमे सप्त रत्ना दधानः अग्निर्होता नि षसादा यजीयान्

४ कमेतं त्वं युवते कुमारं पेषी विभर्षि महिषी जजान
पूर्वीर्हि गर्भः शरदो ववर्ध अपश्यं जातं यदसूत माता

५ क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरन्तं सुमद् यूथं न पुरु शोभमानम्

६ हृणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच
इंद्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्

७ त्वमग्ने वरुणो जायसे यत् त्वं मित्रो भवसि यत् समिद्धः

८ त्वमर्यमा भवसि यत् कनीनां नाम स्वधावन् गुह्यं विभर्षि
अंजन्ति मित्रं सुधितं न गोभिः यद् दंपती समनसा कृणोषि

९ यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानः अमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्

१० प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यन्ति वार्यम्
ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यन्त्यानुषक्

११ अव स्म यस्य वेषणे स्वेदं पथिषु जुह्वति
अभीमह स्वजेन्यं भूमा पृष्ठेव रुरुहुः

१२ स क्षेपयत् स पोषयत् भुवद् वाजस्य सातये

१३ ऋतं चिकित्व ऋतमिच्चिकिद्धि ऋतस्य धारा अनु तृंधि पूर्वीः
नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं सपाम्यरुषस्य वृष्णः

१४ अधूर्षत स्वयमेते वचोभिः ऋजूयते वृजिनानि ब्रुवन्तः

१५ अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते   प्र वव्रेर्वव्रिश्चिकेत

१६ जुहुरे वि चितयन्तः   अनिमिषं नृम्णं पान्ति । आ दृळ्हां पुरं विविशुः

१७ एवाँ अग्निं वसूयवः   सहसानं ववंदिम
स नो विश्वा अति द्विषः   पर्षन्नावेव सुक्रतुः

१८ यो म इति प्रवोचति   अश्वमेधाय सूरये
दददृचा सनिं यते   ददन्मेधामृतायते

१९ अग्ने शर्ध महते सौभगाय   तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व   शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि

(२)

गौरिवीतिः १ बभ्रुः २, ३ गातुः ४ संवरणः ५–८ प्रभूवसुः ९ अत्रिः १०–१२ ।
इंद्रः १–११ अत्रिः १२

१ इंद्र ब्रह्म क्रियमाणा जुषस्व   या ते शविष्ठ नव्या अकर्म
वस्त्रेव भद्रा सुकृता वसूयुः   रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्

२ वेददविद्वांछृणवच्च विद्वान्   वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः

३ स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे   किं मा करन्नवला अस्य सेनाः

४ एकं नु त्वा सत्पतिं पांचजन्यं   जातं शृणोमि यशसं जनेषु

५ अजातशत्रुमजरा स्वर्वती   अनु स्वधामिता दस्ममीयते

६ यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि   सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अह
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति   तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः

७ यस्यावधीत् पितरं यस्य मातरं   यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते
वेतीद्वस्य प्रयता यतंकरः   न किल्विषादीषते वस्व आकरः

८ न पंचभिर् दशभिर् वष्ट्यारभम्

९ चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते   मनो भिया मे अमतेरिदद्रिवः

१० पुष्यात् क्षेमे अभि योगे भवाति   उभे वृतौ संयती सं जयाति
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति   य इंद्राय सुतसोमो ददाशत्

११ यन्मन्यसे वरेण्यं   इंद्र द्युक्षं तदा भर
विद्याम तस्य ते वयं   अकूपारस्य दावने

१२ गूळ्हं सूर्यं तमसापव्रतेन   तुरीयेण ब्रह्मणाविंददत्रिः

(३)

अत्रि: १–५ अवत्सार: ६–९ सदापृण: १० प्रतिक्षत्र: ११ प्रतिरथ: १२, १३ प्रतिप्रभ: १४ स्वस्ति १५,१६ । विश्वे देवा: १–१६

१ आप ओषधीरुत नोऽवन्तु द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशा:
२ पदेपदे मे जरिमा नि धायि
३ विसर्माणं कृणुहि वित्तमेषां ये भुंजते अपृणन्तो न उक्थै:
अपव्रतान् प्रसवे वावृधानान् ब्रह्मद्विष: सूर्याद् यावयस्व
४ य ओहते रक्षसो देववीतौ अचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात
यो व: शमीं शशमानस्य निंदात् तुच्छयान् कामान् करते सिष्विदान:
५ उरौ देवा अनिबाधे स्याम
६ सुगोपा असि न दभाय सुक्रतो परो मायाभिर्ऋत आस नाम ते
७ यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते
८ अनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन्
९ यो जागार तमृच: कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योका:
१० एतो न्वद्य सुध्यो भवाम
११ हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम्
नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुन: विद्वान् पथ: पुरएत ऋजु नेषति
१२ इदं वपुर् निवचनं जनास: चरन्ति यन्नद्यस्तस्थुराप:
१३ वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति
१४ प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्वान् सूक्तैर् देवं सवितारं दुवस्य
१५ विश्वो देवस्य नेतु: मर्तो वुरीत सख्यम्
१६ स्वस्ति पंथामनु चरेम सूर्याचंद्रमसाविव
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि

(४)

श्यावाश्वः १–६ श्रुतवित् ७ अर्चनानाः ८,९ रातहव्यः १०,११ उरुचक्रिः १२ ।
मरुतः १–४ स्त्री शशीयसी ५,६ मित्रावरुणौ ७–१२

१ मा वो रसानितभा कुभा क्रुमुः मा वः सिंधुर्नि रीरमत्
मा वः परि ष्ठात् सरयुः पुरीषिणी अस्मे इत् सुम्नमस्तु वः

२ न स जीयते मरुतो न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति
नास्य राय उप दस्यन्ति नोतयः ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ

३ हये नरो मरुतो मृळता नः तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः
सत्यश्रुतः कवयो युवानः बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः

४ अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय

५ उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी । अदेवत्रादराधसः

६ वि या जानाति जसुरिं वि तृष्यन्तं वि कामिनम् । देवत्रा कृणुते मनः

७ ऋतेन ऋतमपिहितं ध्रुवं वाम्

८ धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया

९ यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा
अस्य प्रियस्य शर्मणि अहिंसानस्य सश्चिरे

१० यश्चिकेत स सुक्रतुः देवत्रा स ब्रवीतु नः

११ व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये

१२ मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा

(५)

अवस्युः १ अत्रिः २-४ सप्तवध्रिः ५,६ सत्यश्रवाः ७,८ श्यावाश्वः ९-१३ ।
अश्विनौ १-६ उषाः ७, ८ सविता ९-१३

१ दस्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्ना सिंधुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम्

२ इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोकः इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम्

३ प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः

४ पूर्वःपूर्वो यजमानो वनीयान्

५ अत्रिर् यद् वामवरोहन्नृबीसं अजोहवीन्नाधमानेव योषा
श्येनस्य चिज्जवसा नूतनेन आगच्छतमश्विना शंतमेन

६ भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये
मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः

७ व्युच्छा दुहितर्दिवः मा चिरं तनुथा अपः
नेत् त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते

८ एषा शुभ्रा न तन्वो विदाना ऊर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात्
अप द्वेषो बाधमाना तमांसि उषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्

९ युंजते मन उत युंजते धियः विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इत् मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः

१० विश्वा रूपाणि प्रति मुंचते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे
वि नाकमख्यत् सविता वरेण्यः अनु प्रयाणमुषसो वि राजति

११ तत् सवितुर् वृणीमहे वयं देवस्य भोजनम्
श्रेष्ठं सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि

१२ अद्या नो देव सवितः, प्रजावत् सावीः सौभगम् । परा दुःष्वप्न्यं सुव

१३ विश्वानि देव सवितः दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव

(६)

अत्रि: १–१० एवयामरुत् ११। पर्जन्य: १–३ पृथिवी ४ वरुण: ५–९
इंद्राग्नी १० मरुत: ११

१ प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत: उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्व:
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत् पर्जन्य: पृथिवीं रेतसावति
२ यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति
यस्य व्रत ओषधीर् विश्वरूपा: स न: पर्जन्य महि शर्म यच्छ
३ महान्तं कोशमुदचा नि षिंच स्यंदन्तां कुल्या विषिता: पुरस्तात्
घृतेन द्यावापृथिवी व्युंधि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्य:
४ दृळ्हा चिद् या वनस्पतीन् क्ष्मया दर्धर्ष्योजसा
यत् ते अभ्रस्य विद्युत: दिवो वर्षन्ति वृष्टय:
५ वनेषु व्यंतरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पय उस्रियासु
हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्वग्निं दिवि सूर्यमदधात् सोममद्रौ
६ नीचीनवारं वरुण: कवंधं प्र ससर्ज रोदसी अंतरिक्षम्
तेन विश्वस्य भुवनस्य राजा यवं न वृष्टिर्व्युनत्ति भूम
७ इमामू ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम्
मानेनेव तस्थिवाँ अंतरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण
८ इमामू नु कवितमस्य मायां महीं देवस्य नकिरा दधर्ष
एकं यदुद्ना न पृणन्त्येनी: आसिंचन्तीरवनय: समुद्रम्
९ अर्यम्यं वरुण मित्र्यं वा सखायं वा सदमिद् भ्रातरं वा
वेशं वा नित्यं वरुणारणं वा यत् सीमागश्चकृमा शिश्रथस्तत्
१० इंद्राग्नी यमवथ: उभा वाजेषु मर्त्यम्
दृळ्हा चित् स प्र भेदंति द्युम्ना वाणीरिव त्रित:
११ प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्

षष्ठं मंडलम्

(१)

भरद्वाजः १–८ । अग्निः १–८

१ पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन्नमृक्तम्
नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ

२ त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्

३ सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे

४ ईजे यज्ञेभिः शशमे शमीभिः ऋधद्वारायाग्नये ददाश
एवा चन तं यशसामजुष्टिः नांहो मर्तं नशते न प्रदृप्तिः

५ शिशीत तेजोऽयसो न धाराम्

६ यो नः सनुत्यो अभिदासदग्ने यो अंतरो मित्रमहो वनुष्यात्
तमजरेभिर् वृषभिस्तव स्वैः तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्

७ स्पृधो वाधस्व सहसा सहस्वान्

८ स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्
चंद्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चंद्र चंद्राभिर्गृणते युवस्व

(२)

भरद्वाजः १–१० । वैश्वानरोऽग्निः १–१०

१ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्याः वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्
कविं सम्राजमतिथिं जनानां आसन्ना पात्रं जनयन्त देवाः

२ वैश्वानर तव तानि व्रतानि महान्यग्ने नकिरा दधर्ष

३ स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत

४ अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः
वैश्वानरो जायमानो न राजा अवातिरज्ज्योतिषाग्निस्तमांसि

५ नाहं तंतुं न वि जानाम्योतुं न यं वयन्ति समरेऽतमानाः
कस्य स्वित् पुत्र इह वक्त्वानि परो वदात्यवरेण पित्रा

६ स इत् तंतुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपाः अवश्चरन् परो अन्येन पश्यन्

७ अयं होता प्रथमः पश्यतेमं इदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु
अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तः अमर्त्यस्तन्वा वर्धमानः

८ ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कं मनो जविष्ठं पतयत्स्वन्तः
विश्वे देवाः समनसः सकेताः एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु

९ वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुः वीदं ज्योतिर् हृदय आहितं यत्
वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं स्विद् वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये

१० विश्वे देवा अनमस्यन् भियानाः त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम्
वैश्वानरोऽवतूतये नः अमर्त्योऽवतूतये नः

(३)

भरद्वाजः १–७ । अग्निः १–७

१ पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु यो अग्नये ददाश विप्र उक्थैः
२ वेपिष्ठो अंगिरसां यद्ध विप्रः मधु च्छंदो भनति रेभ इष्टौ
३ त्वद् विश्वा सुभग सौभगानि अग्ने वि यन्ति वनिनो न वयाः
४ अग्निरिद्धि प्रचेताः अग्निर्वेधस्तम ऋषिः
५ नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते रायो अर्यः
तूर्वन्तो दस्युमायवः व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम्
६ अस्थूरि नो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नस्तेजसा सं शिशाधि
७ आ ते अग्न ऋचा हविः हृदा तष्टं भरामसि
ते ते भवन्तूक्षणः ऋषभासो वशा उत

(४)

भरद्वाजः १–१५ । इंद्रः १–११ गावः १२–१५

१ स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इंद्र विप्रान्
भरद्वाजे नृवत इंद्र सूरीन् दिवि च स्मैधि पार्ये न इंद्र
२ त्वं ह नु त्यददमायो दस्यून् एकः कृष्टीरवनोरार्याय
अस्ति स्विन्नु वीर्यं तत् त इंद्र न स्विदस्ति तदृतुथा वि वोचः
३ यस्ता चकार स कुह स्विदिंद्रः कमा जनं चरति कासु विक्षु
४ तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चित् जरितार आनशुः सुम्नमिंद्र

५ वत्सानां न तंतयस्त इंद्र दामन्वन्तो अदामानः सुदामन्

६ अन्यदद्य कर्वरमन्यदु श्वः असच्च सन्मुहुराचक्रिरिंद्रः

७ न यं जरन्ति शरदो न मासाः न द्याव इंद्रमवकर्शयन्ति
वृद्धस्य चिद् वर्धतामस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना

८ न वीळवे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान्
अज्रा इंद्रस्य गिरयश्चिदृष्वाः गंभीरे चिद् भवति गाधमस्मै

९ या त ऊतिरवमा या परमा या मध्यमेंद्र शुष्मिन्नस्ति
ताभिरू षु वृत्रहत्येऽवीर् नः

१० उग्रं नोऽवः पार्ये अहन् दाः

११ वधीदिंद्रो वरशिखस्य शेषः अभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन्
वृचीवतो यद्धरियूपीयायां हन् पूर्वे अर्धे भियसापरो दर्त्

१२ आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन् सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युः. इंद्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः

१३ गावो भगो गाव इंद्रो मे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः
इमा या गावः स जनास इंद्रः इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिंद्रम्

१४ यूयं गावो मेदयथा कृशं चित् अश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम्
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचः बृहद् वो वय उच्यते सभासु

१५ प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः
मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः

(५)

भरद्वाज: १, २, ८ सुहोत्र: ३ शुनहोत्र: ४, ५ नर: ६, ७ । इंद्र: १–८

१ इंद्रं नर: स्तुवन्तो ब्रह्मकारा: उक्था शंसन्तो देववाततमा:

२ अधा मन्ये बृहदसुर्यमस्य यानि दाधार नकिरा मिनाति
दिवेदिवे सूर्यो दर्शतो भूत् वि सद्मान्युर्विया सुक्रतुर्धात्

३ त्वद् भियेंद्र पार्थिवानि विश्वा अच्युता चिच्च्यावयन्ते रजांसि
द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं दृळ्हं भयते अज्मन्ना ते

४ सं च त्वे जग्मुर्गिर इंद्र पूर्वी: वि च त्वद् यन्ति विभ्वो मनीषा:

५ न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणी:

६ कर्हि स्वित् तदिंद्र यन्नृभिर् नॄन् वीरैर् वीरान् नीळयासे जयाजीन्

७ समुद्रं न सिंधव उक्थशुष्मा: उरुव्यचसं गिर आ विशन्ति

८ सुत: सोमो असुतादिंद्र वस्यान्

(६)

शंयु: १–७ गर्ग: ८–१६ । इंद्र: १–७, ९–१६ सोम: ८

१ अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभायत् अयं रथमयुनक् सप्तरश्मिम्
अयं गोषु शच्या पक्वमन्त: सोमो दाधार दशयंत्रमुत्सम्

२ महीरस्य प्रणीतयः   पूर्वीरुत प्रशस्तयः । नास्य क्षीयन्त ऊतयः
३ सखायो ब्रह्मवाहसे   अर्चत प्र च गायत । स हि नः प्रमतिर्मही
४ त्वमेकस्य वृत्रहन्   अविता द्वयोरसि । उतेदृशे यथा वयम्
५ य एक इत् तमु ष्टुहि   कृष्टीनां विचर्षणिः । पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः
६ दूणाशं सख्यं तव   गौरसि वीर गव्यते । अश्वो अश्वायते भव
७ त्वामिद्धि हवामहे   साता वाजस्य कारवः
त्वां वृत्रेष्विंद्र सत्पतिं नरः   त्वां काष्ठास्ववंतः
८ अयं मे पीत उदियर्ति वाचं   अयं मनीषामुशतीमजीगः
अयं षळुर्वीरमिमीत धीरः   न याभ्यो भुवनं कच्चनारे
९ भवा सुपारो अतिपारयो नः   भवा सुनीतिरुत वामनीतिः
१० ऋष्वा त इंद्र स्थविरस्य बाहू   उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता
११ इंद्र मृळ मह्यं जीवातुमिच्छ   चोदय धियमयसो न धाराम्
१२ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्रं   हवेहवे सुहवं शूरमिंद्रम्
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्रं   स्वस्ति नो मघवा धात्विंद्रः
१३ इंद्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः   सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु   सुवीर्यस्य पतयः स्याम
१४ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्य   अपि भद्रे सौमनसे स्याम
स सुत्रामा स्ववाँ इंद्रो अस्मे   आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु
१५ क ईं स्तवत् कः पृणात् को यजाते   यदुग्रमिन्मघवा विश्वहावेत्
पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं   कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः
१६ रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव   तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय
इंद्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते   युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश

(७)

शंयुः १–४ ऋजिश्वा ५–११ । मरुतः १ पूषा २,३ द्यावाभूमी ४
विश्वे देवाः ५–११

१ भरद्वाजायाव धुक्षत द्विता
धेनुं च विश्वदोहसं इषं च विश्वभोजसम्

२ मा काकंबीरमुद् वृहो वनस्पतिं अशस्तीर्वि हि नीनशः

३ दृतेरिव तेऽवृकमस्तु सख्यम्
अच्छिद्रस्य दधन्वतः सुपूर्णस्य दधन्वतः

४ सकृद्ध द्यौरजायत सकृद् भूमिरजायत
पृश्न्या दुग्धं सकृत् पयः तदन्यो नानु जायते

५ भुवनस्य पितरं गीर्भिराभिः रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ

६ द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः

७ यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमाः विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः

८ पर्जन्यावाता पिप्यतामिषं नः

९ द्यौष्पितः पृथिवि मातरध्रुक् अग्ने भ्रातर्वसवो मृळता नः

१० नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम्
नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे

११ अग्नीपर्जन्याववतं धियं मे

(८)

भरद्वाजः १–१२ । पूषा १–५ इंद्राग्नी ६ सरस्वती ७ अश्विनौ ८
उषाः ९ मरुतः १०,११ मित्रावरुणौ १२

१ अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन् दानाय चोदय । पणेश्चिद् वि म्रदा मनः

२ सं पूषन् विदुषा नय यो अंजसानुशासति । य एवेदमिति ब्रवत्

३ पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते । नो अस्य व्यथते पविः

४ रायो धारास्याघृणे वसो राशिरजाश्व । धीवतोधीवतः सखा

५ आ ते स्वस्तिमीमहे आरेअघामुपावसुम्
अद्या च सर्वतातये श्वश्च सर्वतातये

६ य इंद्राग्नी सुतेषु वां स्तवत् तेष्वृतावृधा
जोषवाकं वदतः पज्रहोषिणा न देवा भसथश्चन

७ त्रिषधस्था सप्तधातुः पंच जाता वर्धयन्ती । वाजेवाजे हव्या भूत्

८ आ वां सुम्ने वरिमन्त्सूरिभिः ष्याम् .

९ आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमाना उषो देवि रोचमाना महोभिः

१० न य ईषन्ते जनुषोऽया नु अंतः सन्तोऽवद्यानि पुनानाः

११ अनेनो वो मरुतो यामो अस्तु अनश्वश्चिद् यमजत्यरथीः
अनवसो अनभीशू रजस्तूः वि रोदसी पथ्या याति साधन्

१२ विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठतमा गीर्भिर् मित्रावरुणा वावृधध्यै

(९)

भरद्वाजः १–८ पायुः ९,१० । इंद्रावरुणौ १ इंद्राविष्णू २ द्यावापृथिवी ३ सविता ४,५ इंद्रासोमौ ६ बृहस्पतिः ७ सोमारुद्रौ ८ पुमान् ९ ब्रह्म १०

१ वज्रेणान्यः शवसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः

२ उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनोः
इंद्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम्

३ घृतवती भुवनानामभिश्रिया उर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा

४ उदू अयाँ उपवक्तेव बाहू हिरण्यया सविता सुप्रतीका

५ वाममद्य सवितर्वाममु श्वः दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेः अया धिया वामभाजः स्याम

६ इंद्रासोमा महि तद् वां महित्वं युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः
युवं सूर्यं विविदथुर्युवं स्वः विश्वा तमांस्यहतं निदश्च

७ यो अद्रिभित् प्रथमजा ऋतावा बृहस्पतिरांगिरसो हविष्मान्
द्विबर्हज्मा प्राघर्मसत् पिता नः आ रोदसी वृषभो रोरवीति

८ सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम्
अव स्यतं मुंचतं यन्नो अस्ति तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत्

९ पुमान् पुमांसं परि पातु विश्वतः

१० ब्रह्म वर्म ममांतरम्

सप्तमं मंडलम्

(१)

वसिष्ठः १–११ । अग्निः १–४,८,११ वैश्वानरोऽग्निः ५–७,९,१०

१ अग्निं नरो दीधितिभिररण्योः हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम्
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम्

२ मा नो अग्नेऽवीरते परा दाः दुर्वाससेऽमतये मा नो अस्यै
मा नः क्षुधे मा रक्षस ऋतावः मा नो दमे मा वन आ जुहूर्थाः

३ अयं कविरकविषु प्रचेताः मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि

४ त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात्
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री

५ वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः

६ त्वं दस्यूँरोकसो अग्न आजः उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय

७ न्यक्रतून् ग्रथिनो मृध्रवाचः पणीँरश्रद्धाँ अवृधाँ अयज्ञान्
प्रप्र तान् दस्यूँरग्निर्विवाय पूर्वश्चकारापराँ अयज्यून्

८ प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरीळितो न होता

९ प्राग्नये विश्वशुचे धियंधे असुरघ्ने मन्म धीतिं भरध्वम्

१० वैश्वानर ब्रह्मणे विंद गातुम्

११ क्षप उस्रश्च दीदिहि स्वग्नयस्त्वया वयम् । सुवीरस्त्वमस्मयुः

(२)

वसिष्ठः १–११। इंद्रः १–११

१ आ पंक्थासो भलानसो भनन्ता आलिनासो विषाणिनः शिवासः

२ यस्तिग्मशृंगो वृषभो न भीमः एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः

३ यदिंद्र पूर्वो अपराय शिक्षन् अयज्ज्यायान् कनीयसो देष्णम्
४ मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः

५ न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान्
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि

६ एको देवत्रा दयसे हिं मर्तान् अस्मिंछूर सवने मादयस्व

७ इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीराम्

८ मा ते मनो विष्वद्र्यग्वि चारीत्

९ न सोम इंद्रमसुतो ममाद नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः

१० उतो घा ते पुरुष्या इदासन् येषां पूर्वेषामशृणोर्ऋषीणाम्

११ इंद्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः
तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः

(३)

वसिष्ठः १–५,७–११ शक्तिः ६। इंद्रः १–६ वसिष्ठपुत्राः ७–११

१ मो षु त्वा वाघतश्चन आरे अस्मन्नि रीरमन्
आरात्ताच्चित् सधमादं न आ गहि इह वा सन्नुप श्रुधि

२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते
इंद्रे कामं जरितारो वसूयवः रथे न पादमा दधुः

३ श्रद्धा इत् ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति

४ अभि त्वा शूर नोनुमः अदुग्धा इव धेनवः
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशं ईशानमिंद्र तस्थुषः

५ न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवः न जातो न जनिष्यते
अश्वायन्तो मघवन्निंद्र वाजिनः गव्यन्तस्त्वा हवामहे

६ इंद्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि

७ श्वित्यंचो मा दक्षिणतस्कपर्दाः धियंजिन्वासो अभि हि प्रमंदुः
उत्तिष्ठन् वोचे परि बर्हिषो नृन् न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः

८ दंडा इवेद् गोअजनास आसन् परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः
अभवच्च पुरएता वसिष्ठः आदित् तृत्सूनां विशो अप्रथन्त

९ त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेतः तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः
त्रयो घर्मास उषसं सचन्ते सर्वाँ इत् ताँ अनु विदुर्वसिष्ठाः

१० सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा गभीरः
वातस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः

११ त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्शमभि सं चरन्ति
यमेन ततं परिधिं वयन्तः अप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः

(४)

वसिष्ठः १-१७ । विश्वे देवाः १-३,७ वाजिनः ४ प्रातःस्मरणम् ५ भगः ६ दधिक्राः ८ रुद्रः ९ आपः १०-१३ वास्तोष्पतिः १४-१६ प्रस्वापिनी उपनिषद् १७

१ शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः

२ ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर् यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य

३ प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः

४ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नः धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः

५ प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम

६ उतेदानीं भगवन्तः स्याम उत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्

७ येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्राः विष्वग्वियन्ति वनिनो न शाखाः

८ आ नो दधिक्राः पथ्यामनक्तु ऋतस्य पंथामन्वेतवा उ

९ इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाव्ने

१० समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः
इंद्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु

११ या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः
समुद्रार्था याः शुचयः पावकाः ता आपो देवीरिह मामवन्तु

१२ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यंजनानाम्
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकाः ता आपो देवीरिह मामवन्तु

१३ यासु राजा वरुणो यासु सोमः विश्वे देवा यासूर्ज्जं मदन्ति
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टः ता आपो देवीरिह मामवन्तु

१४ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्   स्वावेशो अनमीवो भवा नः
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व   शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे

१५ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि   गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिंदो
अजरासस्ते सख्ये स्याम   पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व

१६ वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते   सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या
पाहि क्षेम उत योगे वरं नः   यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१७ सस्तु माता सस्तु पिता   सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः
ससन्तु सर्वे ज्ञातयः   सस्त्वयमभितो जनः

(५)

वसिष्ठः १–९ । मरुतः १,२ रुद्रः ३ मित्रावरुणौ ४,५,७
सूर्यः ६,९ आदित्याः ८

१ नकिर्ह्येषां जनूंषि वेद ते   अंग विद्रे मिथो जनित्रम्

२ नहि वश्चरमं चन   वसिष्ठः परिमंसते

३ त्र्यंवकं यजामहे   सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बंधनात्   मृत्योर् मुक्षीय मामृतात्

४ चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति

५ अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे   स मन्युं मर्त्येष्वा चिकेत

६ उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः   साधारणः सूर्यो मानुषाणाम्

७ अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीः

८ ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधः   घोरासो अनृतद्विषः

९ तच्चक्षुर् देवहितं शुक्रमुच्चरत्
पश्येम शरदः शतं   जीवेम शरदः शतम्

(६)

वसिष्ठः १–१७ । अश्विनौ १–५ उषाः ६–१७

१ नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्ता इषं जनाय दाशुषे वहन्ता

२ इयं मनीषा इयमश्विना गीः इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम्
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन्

३ युवोर् हि नः सख्या पित्र्याणि समानो बंधुरुत तस्य वित्तम्

४ आ विश्वतः पांचजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

५ अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः

६ सत्या सत्येभिर्महती महद्भिः देवी देवेभिर् यजता यजत्रैः
रुजद् दृळ्हानि ददुस्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त

७ उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत्
क्रत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुः आविरकर्भुवनं विश्वमुषाः

८ प्र मे पंथा देवयाना अदृश्रन् अमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः
अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात् प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः

९ तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य
यतः परि जार इवाचरन्ती उषो ददृक्षे न पुनर्यतीव

१० त इद् देवानां सधमाद आसन् ऋतावानः कवयः पूर्व्यासः
गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविदन् सत्यमंत्रा अजनयन्नुषासम्

११ समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते
ते देवानां न मिनन्ति व्रतानि अमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः

१२ प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठाः उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः
गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छ उषः सुजाते प्रथमा जरस्व

१३ एषा नेत्री राधसः सूनृतानां उषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः
दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१४ अंतिवामा दूरे अमित्रमुच्छ

१५ तिल्विलायध्वमुषसो विभातीः

१६ एषा स्या नव्यमायुर्दधाना   गूढ्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि
अग्र एति युवतिरह्रयाणा   प्राचिकितत् सूर्यं यज्ञमग्निम्

१७ तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं   स्याम मातुर् न सूनवः

(७)

वसिष्ठः १–१८। इंद्रावरुणौ १–३ वरुणः ४–१५ इंद्रवायू १६,१७ सरस्वती १८

१ न तमंहो न दुरितानि मर्त्यं   इंद्रावरुणा न तपः कुतश्चन
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं   न तं मर्तस्य नशते परिह्वृतिः

२ युवं हि वस्व उभयस्य राजथः   अध स्मा नोऽवतं पार्ये दिवि

३ यौ सेतृभिररज्जुभिः सिनीथः

४ धीरा त्वस्य महिना जनूंषि   वि यस्तस्तंभ रोदसी चिदुर्वी
प्र नाकमृष्वं नुनुदे बृहन्तं   द्विता नक्षत्रं पप्रथच्च भूम

५ उत स्वया तन्वा सं वदे तत्   कदा न्वंतर्वरुणे भुवानि
किं मे हव्यमहृणानो जुषेत   कदा मृळीकं सुमना अभि ख्यम्

६ पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षु   उपो एमि चिकितुषो विपृच्छम्
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुः   अयं ह तुभ्यं वरुणो हृणीते

७ किमाग आस वरुण ज्येष्ठं   यत् स्तोतारं जिघांससि सखायम्
प्र तन्मे वोचो दूळभ स्वधावः   अव त्वानेना नमसा तुर इयाम्

८ अव द्रुग्धानि पित्र्या सृजा नः   अव या वयं चकृमा तनूभिः
अव राजन् पशुतृपं न तायुं   सृजा वत्सं न दाम्नो वसिष्ठम्

९ न स स्वो दक्षो वरुण ध्रुतिः सा   सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः
अस्ति ज्यायान् कनीयस उपारे   स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता

१० अरं दासो न मीळ्हुषे कराणि अहं देवाय भूर्णयेऽनागाः
अचेतयदचितो देवो अर्यः गृत्सं राये कवितरो जुनाति

११ अयं सु तुभ्यं वरुण स्वधावः हृदि स्तोम उपश्रितश्चिदस्तु
शं नः क्षेमे शमु योगे नो अस्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१२ उवाच मे वरुणो मेधिराय त्रिः सप्त नामाघ्न्या बिभर्ति
विद्वान् पदस्य गुह्या न वोचत् युगाय विप्र उपराय शिक्षन्

१३ वसिष्ठं ह वरुणो नाव्याधात् ऋषिं चकार स्वपा महोभिः

१४ अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम् । मृळा सुक्षत्र मृळय

१५ यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जने अभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि
अचित्ती यत् तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः

१६ ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति
इंद्रवायू वीरवाहं रथं वाम्

१७ यावत् तरस्तन्वो यावदोजः यावन्नरश्चक्षसा दीध्यानाः
शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इंद्रवायू सदतं बर्हिरेदम्

१८ एकाचेतत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यंती गिरिभ्य आ समुद्रात्
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेः घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय

(८)

वसिष्ठः १–९ । विष्णुः १–३ पर्जन्यः ४ मंडूकाः ५–७ सोमः ८ इंद्रः ९

१ परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति
उभे ते विद्म रजसी पृथिव्याः विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से

२ न ते विष्णो जायमानो न जातः देव महिम्नः परमंतमाप
उदस्तभ्ना नाकमृष्वं बृहन्तं दाधर्थ प्राचीं ककुभं पृथिव्याः

३ प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट नाम अर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान्
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके

४ मयोभुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर् देवगोपाः

५ संवत्सरं शशयाना: ब्राह्मणा व्रतचारिणः
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मंडूका अवादिषुः

६ गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम्
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः

७ ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः
संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मंडूकाः प्रावृषीणं बभूव

८ सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते
तयोर्यत् सत्यं यतरदृजीयः तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत्

९ उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इंद्र

अष्टमं मंडलम्

(१)

मेधातिथिः १–४ मेध्यातिथिः ५,६ देवातिथिः ७,८ ब्रह्मातिथिः ९ ।
इंद्रः १–८ अश्विनौ ९

१ महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम्
न सहस्राय नायुताय वज्रिवः न शताय शतामघ

२ वस्याँ इंद्रासि मे पितुः उत भ्रातुरभुंजतः
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे

३ हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मंदासो न सुरायाम् । ऊधर्न नग्ना जरन्ते

४ इच्छन्ति देवाः सून्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रमादमतंद्राः

५ इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितः अभि स्तोमैरनूषत

६ अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवः यज्ञेषु विप्रराज्ये

७ यद् वा रुमे रुशमे श्यावके कृपे इंद्र मादयसे सचा
कण्वासस्त्वा ब्रह्मभिः स्तोमवाहसः इंद्रा यच्छन्त्या गहि

८ सं नः शिशीहि भुरिजोरिव क्षुरं रास्व रायो विमोचन

९ नि षु ब्रह्म जनानां याविष्टं तूयमा गतम्

(२)

वत्सः १–३,८ पुनर्वत्सः ४ सध्वंसः ५,६ शशकर्णः ७ । इंद्रः १–३
मरुतः ४ अश्विनौ ५–७ अग्निः ८

१ अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ । अहं सूर्य इवाजनि

२ उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम् । धिया विप्रो अजायत

३ आदित् प्रत्नस्य रेतसः ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम् । परो यदिध्यते दिवा
४ वपन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान्
५ आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा
भुजी हिरण्यपेशसा कवी गंभीरचेतसा
६ त्रीणि पदान्यश्विनोः आविः सान्ति गुहा परः
७ यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा
८ मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे । विप्रासो जातवेदसः

(३)

पर्वतः १ नारदः २–४ गोषूक्ति-अश्वसूक्तिनौ ५ इरिंबिठिः ६–११ ।
इंद्रः १–१० आदित्याः ११

१ येन सिंधुं महीरपः रथाँ इव प्रचोदयः
पंथामृतस्य यातवे तमीमहे
२ त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत
तमिद् वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम्
३ वृषा ग्रावा वृषा मदः वृषा सोमो अयं सुतः
वृषा यज्ञो यमिन्वसि वृषा हवः
४ वृषा त्वा वृषणं हुवे
५ अपां फेनेन नमुचेः शिर इंद्रोदवर्तयः । विश्वा यदजयः स्पृधः
६ यस्यानूना गभीराः मदा उरवस्तरुत्राः । हर्षुमन्तः शूरसातौ
७ येषामिंद्रस्ते जयन्ति
८ स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः
९ दीर्घस्ते अस्त्वंकुशः येना वसु प्रयच्छसि । यजमानाय सुन्वते
१० इंद्रो मुनीनां सखा
११ तत् सु नः शर्म यच्छत आदित्या यन्मुमोचति
एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः

(४)

सोभरिः १–८ विश्वमनाः ९–१२ । अग्निः १–३, ९ मरुतः ४ इंद्रः ५,६,१०
चित्रः ७ अश्विनौ ८,१२ मित्रावरुणौ ११

१ यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये
यो नमसा स्वध्वरः

२ अवोदेवमुपरिमर्त्यं कृधि वसो विविदुषो वचः

३ प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तिरते वाजभर्मभिः
यस्य त्वं सख्यमावरः

४ क्षमा रपो मरुत आतुरस्य नः इष्कर्ता विह्रुतं पुनः

५ सन्ति कामासो हरिवो ददिष्ट्वं स्मो वयं सन्ति नो धियः

६ नकी रेवन्तं सख्याय विंदसे पीयन्ति ते सुराश्वः
यदा कृणोषि नदनुं समूहसि आदित् पितेव हूयसे

७ चित्र इद् राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु

८ भिषज्यतं यदातुरम्

९ ऋतावानमृतायवः यज्ञस्य साधनं गिरा । उपो एनं जुजुषुर्नमसस्पदे

१० नह्यंग नृतो त्वत् अन्यं विंदामि राधसे

११ अक्षणश्चिद् गातुवित्तरा अनुल्वणेन चक्षसा
नि चिन्मिषन्ता निचिरा नि चिक्यतुः

१२ अहरहर्वृषणा मह्यं शिक्षतम्

(५)

मनु: १–१६ । विश्वे देवाः १–१३ दंपती १४–१६

१ प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषः   यो वो वराय दाशति
प्र प्रजाभिर् जायते धर्मणस्परि   अरिष्टः सर्व एधते

२ यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्   तदेषां नकिरा मिनत्
अरावा चन मर्त्यः

३ बभ्रुरेको विषुणः सूनरो युवा   अंज्यंक्ते हिरण्ययम्

४ योनिमेक आससाद द्योतनः   अंतर्देवेषु मेधिरः

५ वाशीमेको बिभर्ति हस्त आयसीं   अंतर्देवेषु निध्रुविः

६ वज्रमेको बिभर्ति हस्त आहितं   तेन वृत्राणि जिघ्नते

७ तिग्ममेको बिभर्ति हस्त आयुधं   शुचिरुग्रो जलाषभेषजः

८ पथ एकः पीपाय तस्करो यथा   एष वेद निधीनाम्

९ त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे   यत्र देवासो मदन्ति

१० विभिर्द्वा चरत एकया सह   प्र प्रवासेव वसतः

११ सदो द्वा चक्राते उपमा दिवि   सम्राजा सर्पिरासुती

१२ अर्चन्त एके महि साम मन्वत   तेन सूर्यमरोचयन्

१३ मा नः पथः पित्र्यान्मानवादधि   दूरं नैष्ट परावतः

१४ या दंपती समनसा   सुनुत आ च धावतः । देवासो नित्ययाशिरा

१५ न देवानामपि ह्नुतः   सुमतिं न जुगुक्षतः । श्रवो बृहद् विवासतः

१६ पुत्रिणा ता कुमारिणा   विश्वमायुर्व्यश्नुतः । उभा हिरण्यपेशसा

(६)

मेधातिथि: १ मेध्यातिथि: २ नीपातिथि: ३ श्यावाश्व: ४–८ नाभाक: ९,१० ।
इंद्र: १–३,७,८ अश्विनौ ४–६ अग्नि: ९ वरुण: १०

१ वृवदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधु कृण्वन्तमवसे
२ नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति
यो अस्मान् वीर आनयत्
३ स्मत्पुरंधिर् न आ गहि विश्वतोधीर् न ऊतये
दिवो अमुष्य शासत: दिवं यय दिवावसो
४ ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धिय: हतं रक्षांसि सेधतममीवा:
५ क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नॄन् हतं रक्षांसि सेधतममीवा:
६ धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विश: हतं रक्षांसि सेधतममीवा:
७ श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा शृणु यथाशृणोरत्रे: कर्माणि कृण्वत:
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्ये इंद्र ब्रह्माणि वर्धयन्
८ श्यावाश्वस्य रेभतस्तथा शृणु यथाशृणोरत्रे: कर्माणि कृण्वत:
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्ये इंद्र क्षत्राणि वर्धयन्
९ यो अग्नि: सप्तमानुष: श्रितो विश्वेषु सिंधुषु
१० यस्मिन् विश्वानि काव्या चक्रे नाभिरिव श्रिता

(७)

विरूप: १–४ त्रिशोक: ५–९ वश: १० त्रित: ११ प्रगाथो घौर: १२–१४
श्रुष्टिगु: १५ मेध्य: १६–१८ सुपर्ण: १९ । अग्नि: १–४ इंद्र: ५–१०,१५,१६
आदित्योषस: ११ सोम: १२–१४ विश्वे देवा: १७,१८ इंद्रावरुणौ १९

१ त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन् त्सता । सखा सख्या समिध्यसे
२ विशां राजानमद्भुतं अध्यक्षं धर्मणामिमम् । अग्निमीळे स उ श्रवत्

३ अग्निः शुचिव्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः। शुची रोचत आहुतः
४ यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्। स्युष्टे सत्या इहाशिषः
५ उत त्वावधिरं वयं श्रुत्कर्णं सन्तमूतये। दूरादिह हवामहे
६ आ त्वा रंभं न जिव्रयः ररभ्मा शवसस्पते। उश्मसि त्वा सधस्थ आ
७ मा त्वा मूरा अविष्यवः मोपहस्वान आ दभन्। माकीं ब्रह्मद्विषो वनः
८ मा न एकस्मिन्नागसि मा द्वयोरुत त्रिषु। वधीर्मा शूर भूरिषु
९ यस्य ते विश्वमानुषः भूरेर्दत्तस्य वेदति। वसु स्पार्हं तदा भर
१० तमिद्रं दानमीमहे शवसानमभीर्वम्। ईशानं राय ईमहे
११ तदन्नाय तदपसे तं भागमुपसेदुषे
त्रिताय च द्विताय च उषो दुष्ष्वप्न्यं वह
१२ अपाम सोममममृता अभूम अगन्म ज्योतिरविदाम देवान्
किं नूनमस्मान् कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य
१३ अग्नि न मा मथितं सं दिदीपः
१४ त्रातारो देवा अधि वोचता नः मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः
१५ यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्नुते
१६ इंद्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः
१७ यमृत्विजो वहुधा कल्पयन्तः सचेतसो यज्ञमिमं वहन्ति
यो अनूचानो ब्राह्मणो युक्त आसीत् का स्वित् तत्र यजमानस्य संवित्
१८ एक एवाग्निर् वहुधा समिद्धः एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः
एकैवोषाः सर्वमिदं वि भाति एकं वा इदं वि वभूव सर्वम्
१९ इंद्रावरुणा यदृषिभ्यो मनीषां वाचो मतिं श्रुतमदत्तमग्रे
यानि स्थानान्यसृजन्त धीराः यज्ञं तन्वानास्तपसाभ्यपश्यम्

(८)

भर्गः १-४ प्रगाथो घौरः ५ प्रगाथः ६,७ कलिः ८-१० मत्स्या जालनद्धाः ११-१३ । अग्निः १,२ इंद्रः ३-१० आदित्याः ११-१३

१ पाहि नो अग्न एकया पाह्यु्त द्वितीयया
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो

२ शेषे वनेषु मात्रोः सं त्वा मर्तास इंधते
अतंद्रो हव्या वहसि हविष्कृतः आदिद् देवेषु राजसि

३ यत इंद्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिः वि द्विषो वि मृधो जहि

४ अद्याद्या श्वःश्वः इंद्र त्रास्व परे च नः

५ अहं च त्वं च वृत्रहन् सं युज्याव सनिभ्य आ

६ स पूर्व्यो महानां वेनः क्रतुभिरानजे
यस्य द्वारा मनुष्पिता देवेषु धिय आनजे

७ यच्चिद्धि शश्वतामसि इंद्र साधारणस्त्वम् । तं त्वा वयं हवामहे

८ इंद्रो विश्वान् वेकनाटाँ अहर्दृशः उत क्रत्वा पणीँरभि

९ त्वं नो अस्या अमतेरुत क्षुधः अभिशस्तेरव स्पृधि
त्वं न ऊती तव चित्रया धिया शिक्षा शचिष्ठ गातुवित्

१० सोम इद्वः सुतो अस्तु कलयो मा बिभीतन

११ जीवान् नो अभि धेतन आदित्यासः पुरा हथात् । कद्ध स्थ हवनश्रुतः

१२ यद्वः श्रांताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः । तेना नो अधि वोचत

१३ अस्ति देवा अंहोरुरु अस्ति रत्नमनागसः । आदित्या अद्भुतैनसः

(९)

प्रियमेध: १–५ सुदीति-पुरुमीढौ ६ हर्यत: ७,८ सप्तवध्रि: ९ विरूप: १०,११ कुरुसुति: १२,१३ कृत्नु: १४, १५ । इंद्र: १–५,१३ अग्नि: ६–८,१०,११ अश्विनौ ९ मरुत्वान् इंद्र: १२ सोम: १४,१५

१ यस्य ते स्वादु सख्यं स्वाद्वी प्रणीतिरद्रिव: । यज्ञो वितंतसाय्य:
२ उरु णस्तन्वे तने उरु क्षयाय नस्कृधि । उरु णो यंधि जीवसे
३ उरुं नृभ्य उरुं गवे उरुं रथाय पंथाम् । देववीतिं मनामहे
४ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत
५ अव स्वराति गर्गर: गोधा परि सनिष्वणत्
पिंगा परि चनिष्कदत् इंद्राय ब्रह्मोद्यतम्
६ नहि मन्यु: पौरुषेय: ईशे हि व: प्रियजात । त्वमिदसि क्षपावान्
७ सिंचन्ति नमसावतं उच्चाचक्रं परिज्मानम् । नीचीनवारमक्षितम्
८ अधुक्षत् पिप्युषीमिषं ऊर्जं सप्तपदीमरि: । सूर्यस्य सप्त रश्मिभि:
९ प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्नेरशायत । अंत षद्भूतु वामव:
१० तस्मै नूनमभिद्यवे वाचा विरूप नित्यया । वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम्
११ परस्या अधि संवत: अवराँ अभ्या तर । यत्राहमस्मि ताँ अव
१२ वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम् । इंद्रात् परि तन्वं ममे
१३ तवेदिंद्राहमाशसा हस्ते दात्रं चना ददे
दिनस्य वा मघवन् त्संभृतस्य वा पूर्धि यवस्य काशिना
१४ अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत् तुरम्
प्रेमंध: ख्यन्नि: श्रोणो भूत्
१५ अव यत् स्वे सधस्थे देवानां दुर्मतीरीक्षे
राजन्नप द्विष: सेध मीढ्वो अप स्रिध: सेध

(१०)

एकद्यू: १ कुसीदी २ कृष्ण: ३,४ नोधा: ५ नृमेध: ६–८ अपाला ९
श्रुतकक्ष: १० । इंद्र: १,२,५–१० अश्विनौ ३,४

१ इंद्र प्र णो रथमव पश्चाच्चित् संतमद्रिव: । पुरस्तादेनं मे कृधि
२ विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् । तुविमात्रमवोभि:
३ कथा नूनं वां विमना उप स्तवत् युवं धियं ददथुर्वस्यइष्टये
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्
४ ऋतेन देव: सविता शमायते ऋतस्य शृंगमुर्विया वि पप्रथे
ऋतं सासाह महि चित् पृतन्यत: मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्
५ अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव: इंद्रं गीर्भिर् नवामहे
६ यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय
तत् पृथिवीमप्रथय: तदस्तभ्ना उत द्याम्
७ तत् ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृति:
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम्
८ महीव कृत्ति: शरणा त इंद्र
९ कुविच्छकत् कुवित् करत् कुविन्नो वस्यसस्करत्
कुवित् पतिद्विषो यती: इंद्रेण संगमामहै
१० पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्यं सनश्रुतम् । इंद्र इति ब्रवीतन

(११)

तिरश्ची: १–४ रेभ: ५ नृमेध: ६,७ । इंद्र: १–७

१ एतो न्विंद्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान् ममत्तु
२ इंद्र शुद्धो न आ गहि शुद्ध: शुद्धाभिरूतिभि:
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्य:

३ वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणाः विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः
मरुद्‌भिरिंद्र सख्यं ते अस्तु अथेमा विश्वाः पृतना जयासि
४ उप भूष जरितर्मा रुवण्यः श्रावया वाचं कुविदंग वेदत्
५ य इंद्र सस्त्यव्रतः अनुष्वापमदेवयुः
स्वैः ष एवैर्मुमुरत् पोष्यं रयिं सनुतर्धेहि तं ततः
६ इंद्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्
धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे
७ त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ
अधा ते सुम्नमीमहे

(१२)

नेमः १,४–६ इंद्रः २,३ जमदग्निः ७,८ प्रयोगः ९–११ सोभरिः १२,१३।
इंद्रः १–३,६। वाक् ४,५ मित्रावरुणौ ७ गौः ८ अग्निः ९–१३

१ प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्तः इंद्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति
नेंद्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि ष्टवाम
२ अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति आदर्दिरो भुवना दर्दरीमि
३ आ यन्मा वेना अरुहन्नृतस्य एकमासीनं हर्यतस्य पृष्ठे
मनश्चिन्मे हृद आ प्रत्यवोचत् अचिक्रदञ्छिशुमन्तः सखायः
४ यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मंद्रा
चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि क्व स्विदस्याः परमं जगाम
५ देवीं वाचमजनयन्त देवाः तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति
सा नो मंद्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु
६ सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व द्यौर्देहि लोकं वज्राय विष्कभे
हनाव वृत्रं रिणचाव सिंधून् इंद्रस्य यन्तु प्रसवे विसृष्टाः

७ न यः संपृच्छे न पुनर्हवीतवे न संवादाय रमते
तस्मान्नो अद्य समृतेरुरुष्यतं बाहुभ्यां न उरुष्यतम्

८ मा गामनागामदितिं वधिष्ट

९ नहि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति । अथैतादृग्भरामि ते

१० यदग्ने कानि कानि चित् आ ते दारूणि दध्मसि ।
ता जुषस्व यविष्ठ्य

११ यदत्त्युपजिह्विका यद्वम्रो अतिसर्पति । सर्वं तदस्तु ते घृतम्

१२ प्र यं राये निनीषसि मर्तो यस्ते वसो दाशत्
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम्

१३ उदिता यो निदिता वेदिता वसु आ यज्ञियो ववर्तति
दुष्टरा यस्य प्रवणे नोर्मयः धिया वाजं सिषासतः

नवमं मंडलम्

(१)

मधुच्छंदाः १,२ शुनःशेपः ३ असितो देवलः ४–१२ ।
पवमानः १–१२

१ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इंद्राय पातवे सुतः
२ त्वामच्छा चरामसि तदिदर्थं दिवेदिवे । इंदो त्वे न आशसः
३ एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति । अभि द्रोणान्यासदम्
४ असृग्रमिदवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । विदाना अस्य योजनम्
५ मघोन आ पवस्व नः जहि विश्वा अप द्विषः । इंदो सखायमा विश
६ नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुश्चित् सूर्ये सचा । कवेरपत्यमा दुहे
७ मनश्चिन्मनसस्पतिः
८ हिन्वानो मानुषा युगा
९ निरिणानो वि धावति जहच्छर्याणि तान्वा । अत्रा सं जिघ्नते युजा
१० एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः ।
गच्छन्निंद्रस्य निष्कृतम्
११ वृथा क्रीळन्त इंदवः सधस्थमभ्येकमित् । सिंधोरूर्मा व्यक्षरन्
१२ तंतुं तन्वानमुत्तमं अनु प्रवत आशत । उतेदमुत्तमाय्यम्

(२)

दृळ्हच्युतः १ प्रियमेधः २ त्रितः ३ बृहन्मतिः ४,५ मेध्यातिथिः ६ कविः ७–९
उचथ्यः १० अवत्सारः ११–१३। पवमानः १–१३

१ अरुषो जनयन् गिरः सोमः पवत आयुषक्। इंद्रं गच्छन् कविक्रतुः
२ एष वाजी हितो नृभिः विश्वविन्मनसस्पतिः
३ रायः समुद्रांश्चतुरः अस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणः
४ आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना। यत्र देवा इति ब्रवन्
५ परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः। वृष्टिं दिवः परि स्रव
६ शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः। चरन्ति विद्युतो दिवि
७ कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा। ऋणा च धृष्णुश्चयते
८ आत् सोम इंद्रियो रसः वज्रः सहस्रसा भुवत्
९ पवस्व वृष्टिमा सु नः अपामूर्मिं दिवस्परि। अयक्ष्मा बृहतीरिषः
१० चरुर्न यस्तमींखय इंदो न दानमींखय। वधैर्वंधस्नवींखय
११ स्तवा अबिभ्युषा हृदा
१२ अयं सूर्य इवोपदृक्
१३ तरत् स मंदी धावति धारा सुतस्यांधसः। तरत् स मंदी धावति

(३)

अमहीयुः १ जमदग्निः २, ६–८ निध्रुविः ३ कश्यपः ४,५ शतं वैखानसाः
९–१३ वसिष्ठः १४ पवित्रः १५। पवमानः १–१०,१३,१४
अग्निः पवमानः ११,१२ पावमान्यध्येता १५

१ पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युंदतः। सखित्वमा वृणीमहे
२ एते असृग्रमिंदवः तिरः पवित्रमाशवः। विश्वान्यभि सौभगा
३ इंद्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः

४ आ यद्योनिं हिरण्ययं आशुर्ऋतस्य सीदति । जहात्यप्रचेतसः
५ अभि वेना अनूषत इयक्षन्ति प्रचेतसः । मज्जन्त्यविचेतसः
६ आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे । पान्तमा पुरुस्पृहम्
७ आ मंद्रमा वरेण्यं आ विप्रमा मनीषिणम् । पान्तमा पुरुस्पृहम्
८ आ रयिमा सुचेतुनं आ सुक्रतो तनूष्वा । पान्तमा पुरुस्पृहम्
९ य उग्रेभ्यश्चिदोजीयान् शूरेभ्यश्चिच्छूरतरः । भूरिदाभ्यश्चिन्मंहीयान्
१० वृणीमहे सख्याय वृणीमहे युज्याय
११ अग्न आयूंषि पवसे आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम्
१२ अग्निर् ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम्
१३ पवमान ऋतं बृहत् शुक्रं ज्योतिरजीजनत् । कृष्णा तमांसि जंघनत्
१४ यदंति यच्च दूरके भयं विंदति मामिह । पवमान वि तज्जहि
१५ पावमानीर् यो अध्येति ऋषिभिः संभृतं रसम्
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्

(४)

वत्सप्रिः १ रेणुः २ पवित्रः ३–६,१०,११ कविः ७,८ वसुः ९ वाच्यः १२
वेनः १३ अत्रिः १४ । पवमानः १–१४

१ सं दक्षेण मनसा जायते कविः
२ पुरा नो बाधाद्दुरितांति पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते
३ पवित्रवन्तः परि वाचमासते पितैषां प्रत्नो अभि रक्षति व्रतम्
महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम्
४ सहस्रधारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः
अस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः
५ प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरन् श्लोकयंत्रासो रभसस्य मंतवः
अपानक्षासो बधिरा अहासत ऋतस्य पंथां न तरन्ति दुष्कृतः

६ सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः
७ ईक्षेण्यासो अह्यो न चारवः ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्हविः
८ जहि शत्रुमंतिके दूरके च यः उर्वीं गव्यूतिमभयं च नस्कृधि
९ अंतर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसे अनिंद्यो वृजने सोम जागृहि
१० अतप्ततनूर् न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत् समाशत
११ सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत
१२ कृण्वन् त्सचृतं विचृतमभिष्टये इंदुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः
१३ नाके सुपर्णमुपपप्तिवांसं गिरो वेनानामकृपन्त पूर्वीः
१४ विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यंधो अर्षति
अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचं अत्यो न क्रीळन्नसरद्वृषा हरिः

(५)

उशना १,२ वसिष्ठः ३ कश्यपः ४ प्रस्कण्वः ५,६ प्रतर्दनः ७-९
वृषगणः १० कुत्सः ११ । पवमानः १–११

१ ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानां ऋभुर्धीर उशना काव्येन
स चिद्विवेद निहितं यदासां अपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम्
२ राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरं तव सोम धाम
३ शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान्
४ अनु जनान् यतते पंच धीरः
५ हरिः सृजानः पथ्यामृतस्य इयर्ति वाचमरितेव नावम्
देवो देवानां गुह्यानि नाम आविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे
६ अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं च आ च विशन्त्युशतीरुशन्तम्

७ अजीतयेऽहतये पवस्व   स्वस्तये सर्वतातये बृहते
तदुशन्ति विश्व इमे सखायः   तदहं वश्मि पवमान सोम

८ ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनां   ऋषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां   सोमः पवित्रमत्येति रेभन्

९ ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः   सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम्

१० प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणः   देवो देवानां जनिमा विवक्ति

११ अभी नो अर्ष दिव्या वसूनि   अभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः
अभि येन द्रविणमश्नवाम   अभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः

(६)

रेभसूनू १,२ अंधीगुः ३ नारदः ४ चक्षुर्मानवः ५ सप्तर्षयः ६ त्रसदस्युः ७
शिशुः ८,९ कश्यपः १०–१८ । पवमानः १–१८

१ तं गाथया पुराण्या   पुनानमभ्यनूषत

२ त्वं धियं मनोयुजं   सृजा वृष्टिं न तन्यतुः

३ अप श्वानं श्नथिष्टन   सखायो दीर्घजिह्व्यम्

४ सखेव सख्ये गातुवित्तमो भव

५ सहस्रयामा पथिकृद्विचक्षणः

६ उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा   सख्याय बभ्र ऊधनि
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः   शकुना इव पप्तिम

७ अजीजनो अमृत मर्त्येष्वा   ऋतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः

८ नानानं वा उ नो धियः   वि व्रतानि जनानाम्
तक्षा रिष्टं रुतं भिषक्   ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छति. इंद्रायेंदो परि स्रव

९ कारुरहं ततो भिषक्   उपलप्रक्षिणी नना
नानाधियो वसूयवः   अनु गा इव तस्थिम   इंद्रायेंदो परि स्रव

१० शर्यणावति सोमं इंद्रः पिवतु वृत्रहा
वलं दधान आत्मनि करिष्यन् वीर्यं महत् इंद्रायेंदो परि स्रव

११ आ पवस्व दिशां पते आर्जीकात् सोम मीढ्वः
ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुतः इंद्रायेंदो परि स्रव

१२ ऋतं वदन्नृतद्युम्न सत्यं वदन् त्सत्यकर्मन्
श्रद्धां वदन् त्सोम राजन् धात्रा सोम परिष्कृतः इंद्रायेंदो परि स्रव

१३ यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम्
तस्मिन् मां धेहि पवमान अमृते लोके अक्षिते इंद्रायेंदो परि स्रव

१४ यत्र राजा वैवस्वतः यत्रावरोधनं दिवः
यत्रामूर्यह्वतीरापः तत्र माममृतं कृधि इंद्रायेंदो परि स्रव

१५ यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः
लोका यत्र ज्योतिष्मन्तः तत्र माममृतं कृधि इंद्रायेंदो परि स्रव

१६ यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रध्नस्य विष्टपम्
स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधि इंद्रायेंदो परि स्रव

१७ यत्रानंदाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते
कामस्य यत्राप्ताः कामाः तत्र माममृतं कृधि इंद्रायेंदो परि स्रव

१८ ऋषे मंत्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्वर्धयन् गिरः
सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पतिः इंद्रायेंदो परि स्रव

दशमं मंडलम्

(१)

त्रित: १–७ त्वाष्ट्र: ८, ९ । अग्नि: १–८ इंद्र: ९

१ आ देवानामपि पंथामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्रवोळ्हुम्

२ यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरास:
अग्निष्टद्विश्वमा पृणाति विद्वान् येभिर्देवाँ ऋतुभि: कल्पयाति

३ सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर् वर्णैरभि राममस्थात्

४ धन्वन्निव प्रपा असि त्वमग्ने इयक्षवे पूरवे प्रत्न राजन्

५ सप्त मर्यादा: कवयस्ततक्षु: तासामेकामिदभ्यंहुरो गात् .
आयोर्हं स्कंभ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ

६ असच्च सच्च परमे व्योमन् दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे

७ आ यो विवाय सख्या सखिभ्य: अपरिह्वृतो अत्यो न सप्ति:

८ ऋताय सप्त दधिषे पदानि जनयन् मित्रं तन्वे स्वायै

९ स पित्र्याण्यायुधानि विद्वान् इंद्रेषित आप्त्यो अभ्ययुध्यत्

(२)

सिंधुद्वीपः १–९ । आपः १–९

१ आपो हि ष्ठा मयोभुवः ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे
२ यो वः शिवतमो रसः तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः
३ तस्मा अरं गमाम वः यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः
४ शं नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः
५ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम् । अपो याचामि भेषजम्
६ अप्सु मे सोमो अब्रवीत् अंतर्विश्वानि भेषजा ।
अग्निं च विश्वशंभुवम्
७ आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम । ज्योक् च सूर्यं दृशे
८ इदमापः प्र वहत यत् किं च दुरितं मयि
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्
९ आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि
पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा

(३)

यमः १,२ हविर्धानः ३–५ वैवस्वतः ६,७ शंखः ८–१० दमनः ११, १२
देवश्रवाः १३ संकुसुकः १४–१६ मथितः १७ । यमी १,२ अग्निः ३,४
हविर्धाने ५ यमः ६,७ पितरः ८–१० अग्निः क्रव्यादः ११,१२
आपः १३ धाता १४ पितृमेधः १५,१६ गावः १७

१ न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति
२ न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्

३ रपद्‌गंधर्वीरप्या च योषणा   नदस्य नादे परि पातु मे मनः

४ यस्मिन् देवा मन्मनि संचरन्ति   अपीच्ये न वयमस्य विद्म

५ युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिः   वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः   आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः

६ वैवस्वतं संगमनं जनानां   यमं राजानं हविषा दुवस्य

७ याँश्च देवा वावृधुर्ये च देवान्   स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति

८ उपहूताः पितरः सोम्यासः   वर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु   अधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्

९ ये चेह पितरो ये च नेह   याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म

१० ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धाः   मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते

११ सूर्यं चक्षुर् गच्छतु वातमात्मा   द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितं   ओषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः

१२ अजो भागस्तपसा तं तपस्व   तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः

१३ आपो अस्मान् मातरः शुंधयन्तु   घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु

१४ यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति   यथ ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु
यथा न पूर्वमपरो जहाति   एवा धातरायूंषि कल्पयैषाम्

१५ उप सर्प मातरं भूमिमेतां   उरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम्
ऊर्णम्रदा युवतिर् दक्षिणावते   एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात्

१६ उच्छ्वंचस्व पृथिवि मा नि वाधथाः   सूपायनास्मै भव सूपवंचना
माता पुत्रं यथा सिचा   अभ्येनं भूम ऊर्णुहि

१७ नि वर्तध्वं मानु गात   अस्मान् त्सिषक्त रेवतीः

(४)

विमदः १-७ वसुक्रः ८-१२। अग्निः १,२ इंद्रः ३,४,८-१०,१२
अश्विनौ ५ सोमः ६ पूषा ७ देवाः ११

१ भद्रं नो अपि वातय मनः
२ कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रध्न ऋज्र उत शोणो यशस्वान्
३ अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुः अन्यव्रतो अमानुषः
त्वं तस्यामित्रहन् वधर्दासस्य दंभय
४ अस्मे ता त इंद्र सन्तु सत्या अहिंसन्तीरुपस्पृशः
५ मधुमन्मे परायणं मधुमत् पुनरायनम्
६ हृदिस्पृशस्त आसते विश्वेषु सोम धामसु
अधा कामा इमे मम वि वो मदे वि तिष्ठन्ते वसूयवो विवक्षसे
७ ऋषिः स यो मनुर्हितः
८ न वा उ मां वृजने वारयन्ते न पर्वतासो यदहं मनस्ये
मम स्वनात् कृधुकर्णो भयाते एवेदनु द्यून् किरणः समेजात्
९ सप्त वीरासो अधरादुदायन् अष्टोत्तरात्तात् समजग्मिरन् ते
नव पश्चातात् स्थिविमन्त आयन् दश प्राक् सानु वि तिरन्त्यश्नः
१० दशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्याय
गर्भं माता सुधितं वक्षणासु अवेनन्तं तुषयन्ती बिभर्ति
११ देवास आयन् परशूँरबिभ्रन् वना वृश्चन्तो अभि विड्भिरायन्
१२ अन्ने समस्य यदसन् मनीषाः

(५)

कवषः १ – ७ लुशः ८ अभितपाः ९,१० मुष्कवानिंद्रः ११ घोषा १२ – १५।
आपः १ विश्वे देवाः २,८ इंद्रः ३,४,११ अक्षाः ५ अक्षकितवनिंदा ६
कृषिः ७ सूर्यः ९,१० अश्विनौ १२–१५

१ ऋषे जनित्रीर्भुवनस्य पत्नीः अपो वंदस्व सवृधः सयोनीः

२ परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्यात् ऋतस्य पथा नमसा विवासेत्
उत स्वेन क्रतुना सं वदेत श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात्

३ अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदं ह्यप्राट् स प्रैति क्षेत्रविदानुशिष्टः
एतद्वै भद्रमनुशासनस्य उत स्रुतिं विंदत्यंजसीनाम्

४ नि वाधते अमतिर् नग्नता जसुः वेर्नं वेवीयते मतिः

५ नीचा वर्तन्त उपरि स्फुरन्ति अहस्तासो हस्तवन्तं सहन्ते
दिव्या अंगारा इरिणे न्युप्ताः शीताः सन्तो हृदयं निर्दहन्ति

६ जाया तप्यते कितवस्य हीना माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित्

७ अक्षैर् मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः

८ सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताधरात्तात्
सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः

९ सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतः द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च

१० येन सूर्य ज्योतिषा वाधसे तमः जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना
तेनास्मद्विश्वामनिरामनाहुतिं अपामीवामप दुष्ष्वप्न्यं सुव

११ स्ववृजं हि त्वामहमिंद्र शुश्रव अनानुदं वृषभ रध्रचोदनम्
प्र मुंचस्व परि कुत्सादिहा गहि किमु त्वावान् मुष्कयोर्बद्ध आसते

१२ चोदयतं सूनृताः पिन्वतं धियः उत् पुरंधीरीरयतं तदुश्मसि

१३ अमाजुरश्चिद्भवथो युवं भगः अनाशोश्चिदवितारापमस्य चित्
अंधस्य चिन्नासत्या कृशस्य चित् युवामिदाहुर् भिषजा रुतस्य चित्

१४ इयं वामह्वे शृणुतं मे अश्विना पुत्रायेव पितरा मह्यं शिक्षतम्
अनापिरज्ञा असजात्यामतिः पुरा तस्या अभिशस्तेरव स्पृतम्

१५ युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं युवं विधन्तं विधवामुरुष्यथः

(९)

कृष्णः १-६ वत्सप्रिः ७ सप्तगुः ८ वैकुंठ इंद्रः ९-१३ देवाः १४ सौचीकः
१५-१७ । इंद्रः १-६,९-१३ अग्निः ७,१४,१७ वैकुंठ इंद्रः ८
विश्वे देवाः १५ देवाः १६

१ शिशीहि मा शिशयं त्वा शृणोमि
२ त्वां जना ममसत्येष्विंद्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके
३ गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्
४ बृहस्पतिर् नः परि पातु पश्चात् उतोत्तरस्मादधरादघायोः
इंद्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु
५ कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत्
६ पृथक् प्रायन् प्रथमा देवहूतयः अकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहं ईर्मैव ते न्यविशन्त केपयः
७ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः
८ सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्तं उरुं गभीरं पृथुबुध्नमिंद्र
श्रुतऋषिमुग्रमभिमातिषाहं अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः
९ अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिः अहं धनानि सं जयामि शश्वतः
मां हवन्ते पितरं न जंतवः अहं दाशुषे वि भजामि भोजनम्
१० अहमिंद्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन
११ अभीदमेकमेको अस्मि निष्षाट् अभी द्वा किमु त्रयः करन्ति
खले न पर्षान् प्रति हन्मि भूरि किं मा निंदन्ति शत्रवोऽनिंद्राः
१२ अहं दां गृणते पूर्व्यं वसु अहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम्
१३ भुवस्त्वमिंद्र ब्रह्मणा महान् भुवो विश्वेषु सवनेषु यज्ञियः
१४ महत् तदुल्बं स्थविरं तदासीत् येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः
१५ अग्निर् विद्वान् यज्ञं नः कल्पयाति पंचयामं त्रिवृतं सप्ततंतुम्

१६ पंच जना मम होत्रं जुषन्ताम्

१७ अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं उत्तिष्ठत प्र तरता सखाय:

(७)

बृहदुक्थ: १–८ गौपायना: ९–१३। इंद्र: १–७ विश्वे देवा: ८
मन आवर्तनम् ९–१२ हस्त: १३

१ मायेत् सा ते यानि युद्धान्याहु: नाद्य शत्रुं ननु पुरा विवित्से

२ क उ नु ते महिमन: समस्य अस्मत् पूर्व ऋषयोऽन्तमापु:
यन्मातरं च पितरं च साकं अजनयथास्तन्व: स्वाया:

३ चत्वारि ते असुर्याणि नाम अदाभ्यानि महिषस्य सन्ति
त्वमंग तानि विश्वानि वित्से येभि: कर्माणि मघवंचकर्थ

४ त्वं विश्वा दधिषे केवलानि यान्याविर्या च गुहा वसूनि
काममिन्मे मघवन् मा वि तारी: त्वमाज्ञाता त्वमिंद्रासि दाता

५ महत् तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृक् येन भूतं जनयो येन भव्यम्

६ विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार
देवस्य पश्य काव्यं महित्वा अद्या ममार स ह्य: समान

७ ये कर्मण: क्रियमाणस्य मह्ना ऋतेकर्ममुदजायन्त देवा:

८ इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व

९ यत् ते यमं वैवस्वतं मनो जगाम दूरकम्
तत् त आ वर्तयामसि इह क्षयाय जीवसे

१० यत् ते चतस्र: प्रदिश: मनो जगाम दूरकम्
तत् त आ वर्तयामसि इह क्षयाय जीवसे

११ यत् ते परा: परावत: मनो जगाम दूरकम्
तत् त आ वर्तयामसि इह क्षयाय जीवसे

१२ यत् ते भूतं च भव्यं च मनो जगाम दूरकम्
तत् त आ वर्तयामसि इह क्षयाय जीवसे

१३ अयं मे हस्तो भगवान् अयं मे भगवत्तर:
अयं मे विश्वभेषजः अयं शिवाभिमर्शन:

(८)

नाभानेदिष्ठो मानवः १,२ गयः प्लातः ३–५ वसुकर्णः ६,७ अयास्यः ८–१० वाध्र्यश्वः ११ । विश्वे देवाः १–७ बृहस्पतिः ८–१० नराशंसः ११

१ इयं मे नाभिरिह मे सधस्थं इमे मे देवा अयमस्मि सर्वः

२ अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे देवपुत्रा ऋषयस्तच्छृणोतन
सुब्रह्मण्यमंगिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः

३ य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसः विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मंतवः
ते नः कृतादकृतादेनसस्परि अद्या देवासः पिपृता स्वस्तये

४ दैवीं नावं स्वरित्रामनागसं अस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये

५ ऋतूयन्ति ऋतवो हृत्सु धीतयः वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः

६ आर्या व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि

७ वसिष्ठासः पितृवद् वाचमक्रत देवाँ ईळाना ऋषिवत् स्वस्तये

८ इमां धियं सप्तशीर्ष्णीं पिता नः ऋतप्रजातां बृहतीमविंदत्
तुरीयं स्विज्जनयद्विश्वजन्यः अयास्य उक्थमिंद्राय शंसन्

९ ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्यानाः दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः
विप्रं पदमंगिरसो दधानाः यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त

१० नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन्

११ आ देवानामग्रयावेह यातु नराशंसो विश्वरूपेभिरश्वैः

(९)

बृहस्पतिः १–८ । ज्ञानम् १–८

१ बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयं दधानाः
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः

२ सक्तुमिव तितउना पुनन्तः यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत
अत्रा सखायः सख्यानि जानत भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि

३ यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वविंदन्नृषिषु प्रविष्टाम्
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते

४ उत त्वः पश्यन् न ददर्श वाचं उत त्वः शृण्वन् न शृणोत्येनाम्
उतो त्वस्मै तन्वं वि सस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः

५ उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुः नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु
अधेन्वा चरति माययैषः वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम्

६ यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पंथाम्

७ अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायः मनोजवेष्वसमा बभूवुः
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे

८ सर्वे नंदन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः
किल्बिषस्पृत् पितुषणिर्ह्येषां अरं हितो भवति वाजिनाय

(१०)

अदितिः १, २ गौरिवीतिः ३ सिंधुक्षित् ४ जरत्कर्णः ५ स्यूमरश्मिः ६
सप्तिः ७,८ । देवाः १,२ इंद्रः ३ नद्यः ४ ग्रावाणः ५
मरुतः ६ अग्निः ७,८

१ ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत्
देवानां पूर्व्ये युगे असतः सदजायत

२ भूर्जज्ञ उत्तानपदः भुव आशा अजायन्त
अदितेर् दक्षो अजायत दक्षाद्वदितिः परि

३ अप ध्वांतमूर्णुहि पूर्धि चक्षुः मुमुग्ध्यस्मान् निधयेव बद्धान्

४ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तया आर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया

५ वामंवामं वो दिव्याय धाम्ने वसुवसु वः पार्थिवाय सुन्वते

६ विप्रासो न मन्मभिः स्वाध्यः
... क्षितीनां न मर्या अरेपसः

७ अपश्यमस्य महतो महित्वं अमर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु
नाना हनू विभृते सं भरेते असिन्वती बप्सती भूर्यत्तः

८ तद्वामृतं रोदसी प्र ब्रवीमि जायमानो मातरा गर्भो अत्ति
नाहं देवस्य मर्त्यश्चिकेत अग्निरंग विचेताः स प्रचेताः

(११)

विश्वकर्मा १–८ मन्यु: ९–११ । विश्वकर्मा १–८ मन्यु: ९–११

१ य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वत्   ऋषिर् होता न्यसीदत् पिता नः
स आशिषा द्रविणमिच्छमानः   प्रथमच्छदवराँ आ विवेश

२ किं स्विदासीदधिष्ठानं   आरंभणं कतमत् स्वित् कथासीत्
यतो भूमिं जनयन् विश्वकर्मा   वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः

३ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखः   विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैः   द्यावाभूमी जनयन् देव एकः

४ किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस   यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तत्   यदध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन्

५ वाचस्पतिं विश्वकर्‌माणमूतये   मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम
स नो विश्वानि हवनानि जोषत्   विश्वशंभूरवसे साधुकर्मा

६ विश्वकर्मा विमना आद्विहायाः   धाता विधाता परमोत संदृक्
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति   यत्रा सप्तऋषीन् पर एकमाहुः

७ यो नः पिता जनिता यो विधाता   धामानि वेद भुवनानि विश्वा
यो देवानां नामधा एक एव   तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या

८ न तं विदाथ य इमा जजान   अन्यद्युष्माकमंतरं बभूव
नीहारेण प्रावृता जल्प्या च   असुतृप उक्थशासश्चरन्ति

९ अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च   विश्वा वसून्या भरा त्वं नः

१० त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः   स्वयंभूर् भामो अभिमातिषाहः
विश्वचर्षणिः सहुरिः सहावान्   अस्मास्वोजः पृतनासु धेहि

११ विजेषकृदिंद्र इवानवब्रवः   अस्माकं मन्यो अधिपा भवेह
प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि   विद्मा तमुत्सं यत आबभूथ

(१२)

सूर्या १,२ इंद्रः ३ पायुः ४,५ मूर्धन्वान् ६ रेणुः ७ । सोमः १ चंद्रमाः २
इंद्रः ३ रक्षोहाग्निः ४,५ सूर्य-वैश्वानरोऽग्निः ६ इंद्रासोमौ ७

१ सत्येनोत्तभिता भूमिः सूर्येणोत्तभिता द्यौः
२ नवोनवो भवति जायमानः
३ अयमेमि विचाकशत् विचिन्वन् दासमार्यम्
४ वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन्
५ पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात् कविः काव्येन परि पाहि राजन्
६ द्वे स्रुती अशृणवं पितॄणां अहं देवानामुत मर्त्यानाम्
७ आपांतमन्युस्तृपलप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्छरुमाँ ऋजीषी
सोमो विश्वान्यतसा वनानि नार्वागिंद्रं प्रतिमानानि देभुः

(१३)

नारायणः १-१० अरुणः ११,१२ शार्यातः १३ पार्थ्यः १४,१५ अर्बुदः १६ ।
पुरुषः १-१० अग्निः ११,१२ विश्वे देवाः १३-१५ ग्रावाणः १६

१ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्
स भूमिं विश्वतो वृत्वा अत्यतिष्ठद्दशांगुलम्
२ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्
उतामृतत्वस्येशानः यदन्नेनातिरोहति
३ एतावानस्य महिमा अतो ज्यायाँश्च पूरुषः
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि
४ यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत
वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः

५ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे
छंदांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत

६ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः

७ यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते

८ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत

९ चंद्रमा मनसो जातः चक्षोः सूर्यो अजायत
मुखादिंद्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत

१० नाभ्या आसीदंतरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन्

११ स दर्शतश्रीरतिथिर् गृहेगृहे वनेवने शिश्रिये तक्ववीरिव
जनंजनं जन्यो नाति मन्यते विश आ क्षेति विश्यो विशंविशम्

१२ मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनं अग्निं होतारं परिभूतमं मतिम्
तमिदर्भे हविष्या समानमित् तमिन्महे वृणते नान्यं त्वत्

१३ विशामासामभयानामधिक्षितं गीर्भिरु स्वयशसं गृणीमसि

१४ यज्ञेयज्ञे स मर्त्यः देवान् त्सपर्यति
यः सुम्नैर् दीर्घश्रुत्तमः आविवासात्येनान्

१५ प्र तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु

१६ तृदिला अतृदिलासो अद्रयः अश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः
अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृषिता अतृष्णजः

(१४)

उर्वशी १ सर्वहरिः २ आथर्वणो भिषग् ३,४ देवापिः ५ वम्रः ६ दुवस्युः ७,८ बुधः ९,१० मुद्गलः ११ अप्रतिरथः १२ सुमित्रः १३ । पुरूरवाः १ हरिः २ ओषधयः ३,४ बृहस्पतिः ५ इंद्रः ६,११–१३ विश्वे देवाः ७–१०

१ न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता

२ अरं कामाय हरयो दधन्विरे स्थिराय हिन्वन् हरयो हरी तुरा
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्जोषमीयते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशे

३ इष्कृतिर् नाम वो माता अथो यूयं स्थ निष्कृतीः
सीराः पतत्रिणीः स्थन यदामयति निष्कृथ

४ याः फलिनीर् या अफलाः अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः
बृहस्पतिप्रसूताः ता नो मुंचन्त्वंहसः

५ अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन् बृहस्पते अनमीवामिषिराम्

६ हित्वी गयमारेअवद्य आगात्

७ न वो गुहा चकृम भूरि दुष्कृतं नाविष्टचं वसवो देवहेळनम्
माकिर्नो देवा अनृतस्य वर्पसः आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे

८ तनूरेव तन्वो अस्तु भेषजम्

९ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः

१० व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणः वर्म सीव्यध्वं बहुला पृथूनि
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टाः मा वः सुस्रोच्चमसो दृंहता तम्

११ त्वं विश्वस्य जगतः चक्षुरिंद्रासि चक्षुषः

१२ इंद्रं सखायो अनु सं रभध्वम्

१३ अव नो वृजिना शिशीहि ऋचा वनेमानृचः
नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे

(१५)

दक्षिणा १–५ सरमा ६ जाया ७ अष्टादंष्ट्रः ८,९ नभःप्रभेदनः १०,११ शतप्रभेदनः १२ सध्रिः १३–१५ उपस्तुतः १६ अग्नियूपः १७। दक्षिणा १–५ पणयः ६ विश्वे देवाः ७,१३–१५ इंद्रः ८–१२,१७ अग्निः १६

१ उरुः पंथा दक्षिणाया अदर्शि

२ दैवी पूर्तिर् दक्षिणा देवयज्या   न कवारिभ्यो नहि ते पृणन्ति
अथा नरः प्रयतदक्षिणासः   अवद्यभिया बहवः पृणन्ति

३ दक्षिणावान् ग्रामणीरग्रमेति

४ तमेव ऋषिं तमु ब्रह्माणमाहुः   यज्ञन्यं सामगामुक्थशासम्
स शुक्रस्य तन्वो वेद तिस्रः   यः प्रथमो दक्षिणया रराध

५ दक्षिणां वर्म कृणुते विजानन्

६ नाहं तं वेद दभ्यं दभत् सः   यस्येदं दूतीरसरं पराकात्
न तं गूहन्ति स्रवतो गभीराः   हता इंद्रेण पणयः शयध्वे

७ ब्रह्मचारी चरति वेविषद्विषः   स देवानां भवत्येकमंगम्

८ क्व स्विदग्रं क्व बुध्न आसां   आपो मध्यं क्व वो नूनमंतः

९ मुमुक्षमाणा उत या मुमुच्रे   अधेदेता न रमन्ते नितिक्ताः

१० हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य   श्रेष्ठै रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व

११ नि षु सीद गणपते गणेषु   त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्
न ऋते त्वत् क्रियते किं चनारे   महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च

१२ भूरि दक्षेभिर् वचनेभिर् ऋक्वभिः   सख्येभिः सख्यानि प्र वोचत

१३ यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्

१४ कश्छंदसां योगमा वेद धीरः   को धिष्ण्यां प्रति वाचं पपाद
कमृत्विजामष्टमं   शूरमाहुः

१५ भूम्या अंतं पर्येके चरन्ति   रथस्य धूर्षु युक्तासो अस्थुः
श्रमस्य दायं वि भजन्त्येभ्यः   यदा यमो भवति हर्म्ये हितः

१६ वषड्वषळित्यूर्ध्वासो अनक्षन्   नमो नम इत्यूर्ध्वासो अनक्षन्

१७ उग्राय ते सहो बलं ददामि

(१६)

भिक्षुः १–९ लवः १० बृहद्दिवः ११,१२ । धनान्नदानम् १–९
आत्मा (इंद्रः) १० इंद्रः ११,१२

१ न वा उ देवाः क्षुधमिद् वधं ददुः उताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः
उतो रयिः पृणतो नोप दस्यति उतापृणन् मर्डितारं न विंदते

२ य आध्राय चकमानाय पित्वः अन्नवान्त्सन् रफितायोपजग्मुषे
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरा उतो चित् स मर्डितारं न विंदते

३ स इद्भोजो यो गृहवे ददाति अन्नकामाय चरते कृशाय
अरमस्मै भवति यामहूतौ उतापरीषु कृणुते सखायम्

४ न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः
अपास्मात् प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्

५ पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनु पश्येत पंथाम्
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा अन्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः

६ मोघमन्नं विंदते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी

७ कृषन्नित् फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृंक्ते चरित्रैः
वदन् ब्रह्मावदतो वनीयान् पृणन्नापिरपृणन्तमभि ष्यात्

८ एकपाद् भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात् त्रिपादमभ्येति पश्चात्
चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे संपश्यन् पंक्तीरुपतिष्ठमानः

९ समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चिन्न समं दुहाते
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित् सन्तौ न समं पृणीतः

१० हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा । कुवित् सोमस्यापामिति

११ तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः

१२ एवा महान् बृहद्दिवो अथर्वा अवोचत् स्वां तन्वमिंद्रमेव

(१७)

हिरण्यगर्भः १-७ अग्निः ८-१० । कः (प्रजापतिः) १-७ इंद्रः ८
वरुणः ९ सोमः १०

१ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम

२ य आत्मदा वलदा यस्य विश्वे उपासते प्रशिषं यस्य देवाः
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम

३ यः प्राणतो निमिषतों महित्वा एक इद्राजा जगतो वभूव
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम

४ यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः
यस्येमाः प्रदिशो यस्य वाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम

५ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः
यो अंतरिक्षे रजसो विमानः - कस्मै देवाय हविषा विधेम

६ मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्याः यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान
यश्चापश्चंद्रा वृहतीर् जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम

७ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यः विश्वा जातानि परि ता वभूव
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्

८ इंद्रं वृणानः पितरं जहामि

९ निर्माया उ त्ये असुरा अभूवन् त्वं च मा वरुण कामयासे
ऋतेन राजन्ननृतं विविचन् मम राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि

१० इदं स्वरिदमिदास वामं अयं प्रकाश उर्वंतरिक्षम्
हनाव वृत्रं निरेहि सोम हविष्ट्वा सन्तं हविषा यजाम

(१८)

वागांभृणी १-७ रात्रिः ८,९ विहव्यः १० । आत्मा १-७
रात्रिः ८,९ अग्निः १०

१ अहं रुद्रेभिर् वसुभिश्चरामि अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः
अहं मित्रावरुणोभा विभर्मि अहमिंद्राग्नी अहमश्विनोभा

२ अहं सोममाहनसं विभर्मि अहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते

३ अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्

४ मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्
अमंतवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि

५ अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्

६ अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हंतवा उ
अहं जनाय समदं कृणोमि अहं द्यावापृथिवी आ विवेश

७ अहमेव वात इव प्र वामि आरभमाणा भुवनानि विश्वा
परो दिवा पर एना पृथिव्या एतावती महिना सं बभूव

८ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः । विश्वा अधि श्रियोऽधित

९ नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः ।
नि श्येनासश्चिदर्थिनः

१० ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेंधानास्तन्वं पुषेम
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम

(१९)

परमेष्ठी १–७ । भाववृत्तम् १–७

१ नासदासीन्नो सदासीत् तदानीं   नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्   अंभः किमासीद् गहनं गभीरम्

२ न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि   न रात्र्या अह्न आसीत् प्रकेतः
आनीदवातं स्वधया तदेकं   तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास

३ तम आसीत् तमसा गूळ्हमग्रे   अप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्   तपसस्तन्महिनाजायतैकम्

४ कामस्तदग्रे समवर्तताधि   मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्
सतो बंधुमसति निरविंदन्   हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा

५ तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषां   अधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत्
रेतोधा आसन् महिमान आसन्   स्वधा अवस्तात् प्रयतिः परस्तात्

६ को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्   कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेन   अथा को वेद यत आबभूव

७ इयं विसृष्टिर् यत आबभूव   यदि वा दधे यदि वा न
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्   सो अंग वेद यदि वा न वेद

(२०)

यज्ञः १ शकपूतः २,३ सुदाः ४,५ मांधाता ६ गोधा ७ वातजूतिः ८ विप्रजूतिः ९ ।
भाववृत्तम् १ द्युभूम्यश्विनः २ मित्रावरुणौ ३ इंद्रः ४–७
केशिनः = अग्नि-सूर्य-वायवः ८,९

१ यो यज्ञो विश्वतस्तंतुभिस्ततः   एकशतं देवकर्मेभिरायतः
इमे वयन्ति पितरो य आययुः   प्र वयाप वयेत्यासते तते

२ ईजानमिद् द्यौर्गूर्तावसुः ईजानं भूमिरभि प्रभूषणि
ईजानं देवावश्विनौ अभि सुम्नैरवर्धताम्

३ अधा चिन्नु यद्दिधिषामहे वां अभि प्रियं रेक्णः पत्यमानाः
दद्वाँ वा यत् पुष्यति रेक्णः सम्वारन् नकिरस्य मघानि

४ अशत्रुरिंद्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे

५ वयमिंद्र त्वायवः सखित्वमा रभामहे
ऋतस्य नः पथा नय अति विश्वानि दुरिता

६ अव स्वेदा इवाभितः विष्वक् पतन्तु दिद्यवः
दूर्वाया इव तंतवः व्यस्मदेतु दुर्मतिः

७ नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मंत्रश्रुत्यं चरामसि
पक्षेभिरपिकक्षेभिः अत्राभि सं रभामहे

८ मुनयो वातरशनाः पिशंगा वसते मला
वातस्यानु ध्राजिं यन्ति यद्देवासो अविक्षत

९ उन्मदिता मौनेयेन वाताँ आ तस्थिमा वयम्
शरीरेदस्माकं यूयं मर्तासो अभि पश्यथ

(२१)

भरद्वाजः १ कश्यपः २ गोतमः ३ अत्रिः ४ विश्वामित्रः ५ जमदग्निः ६ वसिष्ठः ७ अंगः ८ विश्वावसुः ९ तापसः १० अत्रिः सांख्यः ११ सुपर्णः १२ इंद्राणी १३ देवमुनिः १४,१५ सुवेदाः १६ अर्चन् १७,१८। विश्वे देवाः १–७,१० इंद्रः ८,१२,१३,१६ सविता ९,१७,१८ अश्विनौ ११ अरण्यानी १४,१५

१ उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः
उतागश्चक्रुषं देवाः देवा जीवयथा पुनः

२ द्वाविमौ वातौ वातः आ सिंधोरा परावतः
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः →

३ आ वात वाहि भेषजं   वि वात वाहि यद्रपः
त्वं हि विश्वभेषजः   देवानां दूत ईयसे

४ आ त्वागमं शंतातिभिः   अथो अरिष्टतातिभिः
दक्षं ते भद्रमाभार्षं   परा यक्ष्मं सुवामि ते

५ त्रायन्तामिह देवाः   त्रायतां मरुतां गणः
त्रायन्तां विश्वा भूतानि   यथायमरपा असत्

६ आप इद्वा उ भेषजीः   आपो अमीवचातनीः
आपः सर्वस्य भेषजीः   तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्

७ हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां   जिह्वा वाचः पुरोगवी
अनामयित्नुभ्यां त्वा   ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि

८ मासां विधानमदधा अधि द्यवि   त्वया विभिन्नं भरति प्रधिं पिता

९ सूर्यरश्मिर् हरिकेशः पुरस्तात्   सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम्

१० इंद्रवायू बृहस्पतिं   सुहवेह हवामहे
यथा नः सर्व इज्जनः   संगत्यां सुमना असत्

११ दृळ्हं ग्रंथिं न वि ष्यतं   अत्रिं यविष्ठमा रजः

१२ एना वयो वि तार्यायुर्जीवसे   एना जागार बंधुता

१३ मामनु प्र ते मनः   वत्सं गौरिव धावतु   पथा वारिव धावतु

१४ अरण्यान्यरण्यानि   असौ या प्रेव नश्यसि
कथा ग्रामं न पृच्छसि   न त्वा भीरिव विंदतीइँ

१५ न वा अरण्यानिर्हन्ति   अन्यश्चेन्नाभिगच्छति
स्वादोः फलस्य जग्ध्वाय   यथाकामं नि पद्यते

१६ श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवे

१७ सविता यंत्रैः पृथिवीमरम्णात्   अस्कंभने सविता द्यामदृंहत्

१८ गाव इव ग्रामं यूयुधिरिवाश्वान्   वाश्रेव वत्सं सुमना दुहाना
पतिरिव जायामभि नो न्येतु   धर्ता दिवः सविता विश्ववारः

(२२)

श्रद्धा १,२ शासः ३ यमी ४,५ शिरिंबिठः ६ चक्षुः ७,८ शची ९ पूरणः १० ।
श्रद्धा १,२ इंद्र ३,१० भाववृत्तम् ४,५ अलक्ष्मीघ्नम् ६ सूर्यः ७,८ शची ९

१ श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि

२ श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यंदिनं परि
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः

३ शास इत्था महाँ असि अमित्रखादो अद्भुतः
न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन

४ तपसा ये अनाधृष्याः तपसा ये स्वर्ययुः
तपो ये चक्रिरे महः ताँश्चिदेवापि गच्छतात्

५ ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः
ये वा सहस्रदक्षिणाः ताँश्चिदेवापि गच्छतात्

६ अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे
शिरिंविठस्य सत्वभिः तेभिष्ट्वा चातयामसि

७ सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अंतरिक्षात् । अग्निर् नः पार्थिवेभ्यः

८ चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः । चक्षुर् धाता दधातु नः

९ मम पुत्राः शत्रुहणः अथो मे दुहिता विराट्
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः

१० य उशता मनसा सोममस्मै सर्वंहृदा देवकामः सुनोति
न गा इंद्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति

(२३)

प्राजापत्यः १,२ ब्राह्मः ३ प्रचेताः ४ ऋषभो वैराजः ५ अनिलः ६,७ शबरः ८,९
इटः १० सूनुः ११। राजयक्ष्मघ्नम् १, २ रक्षोहा ३ दुःस्वप्ननाशनम् ४
सपत्नघ्नम् ५ वायुः ६,७ गावः ८,९ इंद्रः १० अग्निः ११

१ ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इंद्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्
२ शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमंताञ्छतमु वसंतान्
३ यस्त्वा भ्राता पतिर् भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि
४ यदाशसा निःशसाभिशसा उपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः
अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतानि अजुष्टान्यारे अस्मद् दधातु
५ अभिभूरहमागमं विश्वकर्मेण धाम्ना
आ वश्चित्तमा वो व्रतं आ वोऽहं समितिं ददे
६ अंतरिक्षे पथिभिरीयमानः न नि विशते कतमच्चनाहः
अपां सखा प्रथमजा ऋतावा क्व स्विज्जातः कुत आ वभूव
७ आत्मा देवानां भुवनस्य गर्भः यथावशं चरति देव एषः
घोषा इदस्य शृण्विरे न रूपं तस्मै वाताय हविषा विधेम
८ मयोभूर्वातो अभि वातूस्राः ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम्
पीवस्वतीर्जीवधन्याः पिवन्तु अवसाय पद्वते रुद्र मृळ
९ याः सरूपा विरूपा एकरूपाः यासामग्निरिष्टचा नामानि वेद
या अंगिरसस्तपसेह चक्रुः ताभ्यः पर्जन्य महि शर्म यच्छ
१० त्वं त्यमिंद्र सूर्यं पश्चा सन्तं पुरस्कृधि । देवानां चित्तिरो वशम्
११ अयमग्निरुरुष्यति अमृतादिव जन्मनः

(२४)

पतंगः १ अरिष्टनेमिः २ शिबिः ३ उलः ४ वत्सः ५ सार्पराज्ञी ६ अघमर्षणः ७-९ संवननः १०-१३। मायाभेदः १ तार्क्ष्यः २ इंद्रः ३ वायुः ४ अग्निः ५ आत्मा सूर्यो वा ६ भाववृत्तम् ७-९ संज्ञानम् १०-१३

१ पतंगमक्तमसुरस्य मायया हृदा पश्यन्ति मनसा विपश्चितः
समुद्रे अंतः कवयो वि चक्षते मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः

२ सद्यश्चिद्यः शवसा पंच कृष्टीः सूर्य इव ज्योतिषापस्ततान
सहस्रसाः शतसा अस्य रंहिः न स्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम्

३ उत्तिष्ठताव पश्यत इंद्रस्य भागमृत्वियम्
यदि श्रातो जुहोतन यद्यश्रातो ममत्तन

४ यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः। ततो नो देहि जीवसे

५ यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति। स नः पर्षदति द्विषः

६ अंतश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्

७ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः

८ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत
अहोरात्राणि विदधत् विश्वस्य मिषतो वशी

९ सूर्याचंद्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्
दिवं च पृथिवीं च अंतरिक्षमथो स्वः

१० संसमिद्युवसे वृषन्   अग्ने विश्वान्यर्य आ
इळस्पदे समिध्यसे   स नो वसून्या भर

११ सं गच्छध्वं सं वदध्वं   सं वो मनांसि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे   संजानाना उपासते

१२ समानो मंत्रः समितिः समानी   समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः   समानेन वो हविषा जुहोमि

१३ समानी व आकूतिः   समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनः   यथा वः सुसहासति